अध्यक्षीय :

एक पत्र सदस्यों के नाम

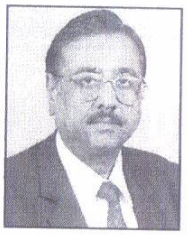

श्री नन्दलाल रुंगटा, राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

समाज में कई बार घटनाक्रम से विचारों में बदलाव झलकते हैं। कई बार नाकारात्मक विचारों के बीच भी साकारात्मक व रचनात्मक कार्य किए जा सकते हैं। सम्मेलन के मध्य भी कई ऐसे अवसर मुझे प्राप्त हुए, जहाँ इसकी घनिष्ठता देखने का अवसर मिला। समाज के अन्दर रत्नों का खजाना भी मिला। संगठित विचारधाराओं का विशाल समूह एक तरफ कार्य कर रहा है तो दूसरी तरफ उद्योग व व्यापार से जुड़े लोगों का एक बहुत बड़ा वर्ग समाज का अभी भी इसकी उपयोगिता को स्वीकार नहीं कर पा रहा है।

संभवत: हमारे बीच आलोचनात्मक विचार धारा ज्यादा सक्रिय है जिसे बदला जाना जरूरी है। समाज के मजबूत पक्ष को अस्वीकार कर हम कमजोर पक्ष की मदद नहीं कर सकते यह सच्चाई है इसे सभी को स्वीकार करना चाहिए।

सम्मेलन का कार्य शुरू से ही आलोचनात्मक रहा है। समय–समय पर इसकी आलोचनाएं इस संस्था की सक्रियता का प्रमाण है। परन्तु कुछ तत्व खुद के निहित स्वार्थपूर्त्ति के लिए आलोचनाओं के बीमार हो जाते हैं। कई बार मन की बातों को शब्दों में व्यक्त करने की प्रबल इच्छा रहते हुए भी आप सभी से बातें न कर सका, पता नहीं कब कौन सी बात किसको लग जाए, किसके स्वाभिमान को ठेस लग जाए। बार–बार मुझे ऐसा लगता रहा समाज बहुत बड़ा है। हर व्यक्ति की अपनी मर्यादा है जिसका सम्मान जरूरी है।

मेरी इच्छा है कि आप समाज में कार्य करना चाहते हैं तो कार्य करने वाले सदस्यों को सहयोग प्रदान करना भी सामाजिक कार्य है। सभी व्यक्ति पद पर नहीं आ सकते, जो पद पर हैं उनसे गलती संभव है। उनकी गलतियों को बेवजह विवाद में डालना किसी भी तरह से उचित नहीं है। हाँ! लोकतांत्रिक अंकुश जरूरी है ताकि संस्था का कोई अहित न हो सके।

सम्मेलन हम सबका है। हमारे पूर्वजों ने बड़ी श्रद्धा से इसे सींचा है। समाज में इसका व्यापक प्रभाव है। कई समाज सुधार के कार्यक्रम हमने इस मंच से संचालित किए। राजनैतिक संभावनाओं को भी हमें तलाशने का अवसर इस मंच ने प्रदान किया है। राष्ट्रीय स्तर पर इसका व्यापक प्रभाव है।

गत अखिल भारतीय समिति की बैठक नागपुर में आयोजित हुई जिसमें सर्वसम्मति से सम्मेलन के अगले सत्र के लिए श्री हरिप्रसाद जी कानोड़िया को अध्यक्ष पद हेतु चुन लिया गया है। आपका परिवार भी सम्मलन से स्थापना काल से जूड़ा रहा है। आप एक सफल समाजसेवी व उद्योगपति भी हैं। आप सभी की तरफ से मैं इन्हें बधाई प्रेषित करता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि श्री कानोड़िया जी के नेतृत्व में सम्मेलन आगे बढ़ेगा।

इस बार सम्मेलन के प्राय: सभी प्रान्तों में युवा मंच के कई वरिष्ठ सदस्यों ने सम्मेलन में सक्रिय रूप से हिस्सेदारी ली है। धीरे–धीरे इनकी संख्या में विस्तार जरूरी है।

अभी भी हमें बहुत से कार्य करने हैं। उच्च शिक्षा महाकोष की स्थापना, एकल सदस्यता तथा संविधान संशोधन, सदस्यता विस्तार पर जोर जैसे कई विषय को हमें आगे बढ़ाना होगा। आपके बीच पूर्व की भांति सक्रिय रहूँगा। यह सुअवसर मुझे हमेशा रोमांचित करता रहेगा।◆

गत अखिल भारतीय समिति की बैठक नागपुर में आयोजित हुई जिसमें सर्वसम्मति से सम्मेलन के अगले सत्र के लिए श्री हरिप्रसाद कानोड़िया जी को अध्यक्ष पद हेतु चुन लिया गया है। आपका परिवार भी सम्मलन से स्थापना काल से जूड़ रहा है। आप एक सफल समाजसेवी व उद्योगपति भी हैं। आप सभी की तरफ से मैं इन्हें बधाई प्रेशित करता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि श्री कानोड़िया जी के नेतृत्व में सम्मेलन आगे बढ़ेगा।

जीवन परिचय :

हरिप्रसाद कानोड़िया

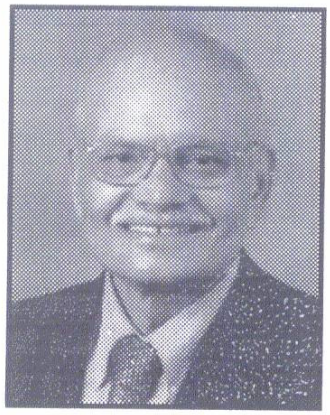

सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी श्री हरिप्रसाद कानोड़िया का जन्म बिहार के बड़हिया गांव में ११ जनवरी १९४२ को एक सम्पन्न परिवार में हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा बिहार में हुयी। तत्पश्चात कोलकाता विश्वविद्यालय से बी.काम., एल.एल.बी. किया।

श्री कानोड़िया गत ३० वर्षों से अधिक से अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन से सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री नन्दकिशोर जालान की प्रेरणा से जुड़े। सम्मेलन के अन्य पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने श्री कानोड़िया को २००१ में सम्मेलन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी में आमंत्रित किया। २००४ से २००६ तक आप राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष रहे एवं २००६ से आप सम्मेलन के उपाध्यक्ष पद पर हैं। सम्मेलन के विभिन्न अधिवेशनों में आपने भागीदारी की है तथा कई प्रान्तों का दौरा किया है।

मारवाड़ी सम्मेलन फाउण्डेशन के आप मैनेजिंग ट्रस्टी हैं। आपको दादाभाई नैरोजी इंटरनेशनल सोसाइटी द्वारा मिलेनियम अवार्ड, दक्षिण कालीकाता क्रीड़ा ओ संस्कृति परिषद, कोलकाता द्वारा सेवा रत्न सम्मान अवार्ड, स्वास्थ्य एवं पर्यावरण के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवा कार्य के लिए भारत सरकार द्वारा नेशनल केडेट कार्प्स अवार्ड, राष्ट्रीय एकता पुरस्कार, वर्ल्ड फ्लैस मूवमेंट ट्रस्ट द्वारा शांतिदूत अवार्ड सहित कई पुरस्कारों से नवाजा जा चुका है।

आपकी व्यवसायिक कम्पनी श्रेई इन्फ्रास्ट्रेक्चर एवं श्रेई फाईनान्स देश का सुपरिचित व्यवसायिक प्रतिष्ठान है। देश के सभी बड़े शहरों के अलावा जर्मनी, रूस, लन्दन आदि विदेशों में कम्पनी के कार्यालय है।

आप राजस्थान फाउण्डेशन, एग्री हार्टिकल्चर सोसायटी, मनोविकास केन्द्र, कलकत्ता चेम्बर ऑफ कामर्स, भारत चेम्बर ऑफ कामर्स, पश्चिम बंगाल संयुक्त राष्ट्र संघ संस्था, श्री विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी हस्पताल आदि संस्थाओं के पदाधिकारी रहे हैं।

भारत एवं राज्य सरकारों ने श्री कानोड़िया को युनाइटेड बैंक ऑफ इण्डिया एवं पश्चिम बंगाल इण्डस्ट्रीयल इन्फ्रास्ट्रेक्चर डेवलपमेंट कारपोरेशन के निर्देशक पद पर नियुक्त किया। कलकत्ता हाईकोर्ट में लोक अदालत के जज रहे हैं तथा कोलम्बिया दूतावास के परामर्शदाता हैं।

पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी के साथ ट्रेड डेलिगेशन में आपने चीन की यात्रा की तथा आपको कई राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किये गये हैं। ◆

श्री कानोड़िया सभापति निर्वाचित

गत २१ नवम्बर को नागपुर में आयोजित अखिल भारतीय समिति की बैठक में सुप्रसिद्ध उद्योगपति व समाजसेवी श्री हरिप्रसाद कानोड़िया को सर्वसम्मत्ति से अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का आगामी सत्र २०११–१३ के लिए सभापति निर्वाचित किया गया। वर्तमान में श्री कानोड़िया सम्मेलन उपाध्यक्ष हैं। आगामी जनवरी २०११ में पटना में आयोजित २२वें राष्ट्रीय अधिवेशन में श्री कानोड़िया पद्भार ग्रहण करेंगे।

अखिल भारतीय समिति की बैठक, नागपुर

राष्ट्रीय महामंत्री की रिपोर्ट

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, उपस्थित सभी पदाधिकारीगण एवं विभिन्न प्रांतों से आये पदाधिकारी व सदस्यों को दीपावली की शुभकामनाएं देते हुए मैं अखिल भारतीय समिति की बैठक में आपका स्वागत करता हूँ। आपने यहाँ उपस्थित होकर न सिर्फ हमारा उत्साह बढ़ाया है बल्कि समाज, संगठन एवं सम्मेलन के प्रति अपना लगाव प्रदर्शित किया है। इसके लिए मैं आपका आभार प्रकट करता हूँ।

रविवार, 28 मार्च को चैम्बर भवन, बिष्टुपुर, जमशेदपुर, झारखण्ड में अखिल भारतीय समिति की बैठक हुई थी जिसमें अध्यक्ष महोदय ने विवाह समारोह में बढ़ रही फिजूलखर्ची, मद्यपान, नाच-गान, तलाक, परिवार में हो रहे बिखराव जैसी सामाजिक समस्याओं को समाज के साझा प्रयास से रोकने का आग्रह किया। आपने हमारे पूर्वजों द्वारा बनाई गई गोशाला, अस्पताल, धर्मशालाओं की दुर्दशा का जिक्र करते हुए कहा था कि आज इन्हें बचाने की जरूरत है। इसके बाद हुए कार्यों का ब्यौरा मैं यहां प्रस्तुत कर रहा हूँ-

सम्मेलन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की पंचम बैठक 24 अप्रैल 2010 को हिन्दुस्तान क्लब में हुई जिसकी अध्यक्षता राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुंगटा ने की। बैठक में सर्वसम्मति से सम्मेलन का उच्च शिक्षा कोष गठित करने का निर्णय लिया गया। 10 लाख रुपये से बनने वाले इस कोष हेतु हरदम यह प्रयास रहेगा कि कोष की राशि इससे कम न हो। इसके अलावा श्री रतन शाह के सुझाव पर सम्मेलन के प्रांतों, जिलों एवं शाखाओं के माध्यम से मारवाड़ियों की जनगणना कराने का भी निर्णय लिया गया। इस हेतु सभी प्रांतों को पत्र भेज दिया गया है। चार माह के भीतर इस कार्य को बखूबी अंजाम देने वाले प्रांतों, जिलों एवं शाखाओं को सम्मेलन के कौस्तुभ जयंती वर्ष में ही सम्मानित भी किया जायेगा।

सम्मेलन द्वारा शनिवार, 15 मई 2010 को आडंबर और दिखावा - समाज के लिए अभिशाप विषय पर संगोष्ठी का आयोजन दी कलकत्ता ट्रामवेज कंपनी (१९७८) लिमिटेड हाल, आरएन मुखर्जी रोड में किया गया। संगोष्ठी की अध्यक्षता सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष नंदलाल रुँगटा ने की। उन्होंने अपने संबोधित में कहा कि सम्मेलन के बैनर तले समय-समय पर सामाजिक विषयों पर संगोष्ठियां आयोजित की जाती हैं। जिसका मकसद लोगों को सही राह दिखाना होता है। इस मौके पर पुष्करलाल केडिया, जुगलकिशोर जैथलिया, मोहनलाल तुलस्यान के अलावा सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री रामअवतार पोद्दार, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष आत्माराम सोंथलिया ने भी वक्तव्य रखा। वक्ताओं ने कहा कि यह दुखद है कि युवा पीढ़ी पश्चिम की तरफ बढ़ती जा रही है। इन लोगों ने उदाहरण देते हुए कहा कि सूर्य भी जब पश्चिम की तरफ बढ़ता है तो उसे अस्त होना पड़ता है। इसलिए अगर अस्त (समाप्त) होने से बचना है तो पश्चिम की तरफ बढ़ते कदम को रोकना होगा।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की परामर्शदात्री समिति की बैठक रविवार, 4 जुलाई 2010 को द कान्क्लेव, ए.जे.सी. बोस रोड, कोलकाता सम्पन्न हुई। सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रुँगटा ने बैठक की अध्यक्षता की।

सम्मेलन द्वारा शनिवार, 10 जुलाई 2010 को ***धार्मिक आयोजन - घटती आस्था बढ़ता दिखावा*** विषय पर संगोष्ठी का आयोजन दी कलकत्ता ट्रामवेज कंपनी लिमिटेड हाल, आर.एन. मुखर्जी रोड, कोलकाता में किया गया।

सम्मेलन द्वारा शनिवार, 10 जुलाई 2010 को ही उच्च शिक्षा हेतु पायलट की ट्रेनिंग ले रहे कोलकाता के बेहाला के निवासी नवीन कुमार धारीवाल को दो लाख का चेक उच्च शिक्षा कमेटी के चैयरमेन श्री प्रह्लादराय अग्रवाल ने सौंपा।

शनिवार, 31 जुलाई 2010 को वार्षिक साधारण सभा मर्चेन्ट चैम्बर कामर्स हॉल, कोलकाता में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नंदलाल रुँगटा की अध्यक्षता में हुई। बैठक में गत वित्तीय वर्ष का लोखा-जोखा परित किया गया तथा श्री पी.के. लिल्हा को पुनः आडिटर नियुक्त किया गया।

सम्मेलन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक शनिवार, 7 अगस्त 2010 को 'द कान्क्लेव', कोलकाता में हुई। सभापति ने हैदराबाद में प्रस्तावित अखिल भारतीय समिति की मीटिंग में नये सभापति का चुनाव कराने की इच्छा जाहिर की तथा सर्वसम्मत्ति से यह निर्णय लिया गया कि सम्मेलन के संविधान के अनुसार सभी राज्यों से नये सभापति का नाम मंगवाया जाए।

नये अध्यक्ष के चुनाव हेतु 9 प्रांतों यथा आन्ध्र प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, दिल्ली, झारखण्ड, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, उत्कल व उत्तर प्रदेश ने श्री हरिप्रसाद कानोड़िया तथा एक प्रांत कर्नाटक ने श्री विश्वम्भर नेवर का नाम अध्यक्ष पद के लिये प्रस्तावित किया है।

शनिवार 18 सितम्बर 2010 को राष्ट्रीय कार्यकारिणी की आवश्यक बैठक हिन्दुस्तान क्लब के बोर्ड रूम में हुई। आगामी अध्यक्ष पद के लिए श्री हरिप्रसाद कानोड़िया एवं श्री विश्वम्भर नेवर का नाम आने के बाद बैठक में आम सहमति से नये अध्यक्ष के चुनाव हेतु श्री नन्दलाल सिंहानिया को चुनाव अधिकारी नियुक्त किया गया।

आपको बताते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि 22 सितम्बर 2010 को कला मंदिर, कोलकाता में आयोजित सम्मेलन के कौस्तुभ जयंती समारोह में भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल ने उपस्थित होकर अपने सम्बोधन से समाज का नाम गौरवान्वित किया। इस मौके पर भारतीय डाक विभाग की ओर से जारी किये गये विशेष पोस्टल कवर की प्रथम प्रति प. बंगाल के राज्यपाल श्री एम.के. नारायणन ने महामहिम राष्ट्रपति को सौंपी। अध्यक्ष श्री रुँगटा ने इस मौके पर उच्च शिक्षा हेतु सम्मेलन का दो करोड़ रु. का महाशिक्षा कोष बनाये जाने की घोषणा की। इस मौके पर कलामंदिर सभागार समाज के लोगों से खचाखच भरा हुआ था। इस अवसर पर बिहार, उत्कल, मध्य प्रदेश, पूर्वोत्तर, पश्चिम बंगाल से अध्यक्ष, महामंत्री के अलावा भारी संख्या में प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

गत 25 अक्टूबर को स्थायी समिति की बैठक सम्मेलन भवन में श्री नन्दलाल रुँगटा की अध्यक्षता में हुई।

पहली बार सम्मेलन के सभी संरक्षक एवं आजीवन सदस्यों को सम्मेलन का प्रतीक चिन्ह (लेबल पिन) तथा सदस्यता प्रमाणपत्र भेजा गया है। इसके अलावा कौस्तुभ जयंती के अवसर पर भारत की महामहिम राष्ट्रपति द्वारा दिये गये अभिभाषण की 5000 प्रतियां छपवाकर सभी सदस्यों को भेजी गई है। साथ में उक्त अवसर पर डाक विभाग द्वारा जारी किया गया विशेष पोस्टल कवर भी सभी सदस्यों को भेजा गया है।

सम्मेलन द्वारा प्रत्येक दो वर्ष में दिया जाने वाला 11,000 रु. की राशि वाला राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार, जो कि स्व. सीताराम रुँगटा के नाम पर दिया जाता है, अब प्रत्येक वर्ष स्थापना दिवस समारोह पर दिया जायेगा। इसके लिए पहले से एक लाख रुपये की राशि फिक्स डिपाजिट थी। अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुँगटा ने अपने पूज्य पिताजी के नाम पर दिये जाने वाले इस सम्मान हेतु और 4 लाख रुपये दिये सम्मेलन को दिये हैं। जिन्हें भी फिक्सड डिपाजिट करा दिया गया है। अब से सम्मान की राशि भी बढ़ाकर 21,000 रु. कर दी गई है। इन 5 लाख रुपयों से प्राप्त ब्याज से यह राशि दी जायेगी तथा सम्मानित व्यक्ति के आने-जाने तथा रहने का प्रबन्ध किया जायेगा।

कुछ प्रांतीय सम्मेलनों के चुनाव गत दिनों सम्पन्न हुए जिनमें मध्य प्रदेश प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के नये अध्यक्ष श्री कैलाश चंद्र गुप्ता तथा महामंत्री श्री कमलेश कुमार नाहटा, महाराष्ट्र के अध्यक्ष श्री जय प्रकाश शंकरलाल मूँधड़ा व उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष श्री राजेश कसेरा (सी.ए.) तथा मंत्री श्री आकाश गोयनका (एम.बी.ए.) चुने गये हैं। तमिलनाडु व आंध्र प्रदेश प्रांत को पत्र देकर जल्द से जल्द चुनाव कराने का आग्रह किया गया है।

सम्मेलन के वर्तमान सत्र में अब तक 141 संरक्षक, 171 आजीवन तथा 154 विशिष्ट सदस्य बन चुके हैं। सम्मेलन के संविधान के अनुसार, इससे प्राप्त राशि को फिक्स डिपाजिट करा दिया गया है।

वर्तमान में एक्सीस बैंक में 51 लाख 50 हजार, एचडीएफसी बैंक में 45 लाख 50 हजार रुपये फिक्स डिपाजिट हैं। इसके अलावा सिंडिकेट बैंक में 5 लाख रुपये फिक्सड डिपाजिट हैं जो कि स्व. सीताराम रुँगटा के नाम पर दिये जाने वाले राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार हेतु राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुँगटा ने अपने पूज्य पिताजी के नाम पर दिये हैं।◆

महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में

अखिल भारतीय समिति की बैठक

समाज के सामने आ रही है नई-नई चुनौतियां - नन्दलाल रुँगटा

सम्मेलन सभापति नन्दलाल रुँगटा गणेश पूजन कर बैठक का शुभारम्भ करते हुए।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की सर्वोच्च नीति निर्धारक समिति अखिल भारतीय समिति की बैठक महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में रविवार, 21 नवम्बर 2010 को पगरिया लॉन, 204, स्माल फैक्टरी एरिया, बगड़गंज, नागपुर-440008 सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुँगटा की अध्यक्षता में हुई।

बैठक में अखिल भातीय समिति तथा आमंत्रित सदस्यों की उपस्थिति इस प्रकार रही-

१. श्री नन्दलाल रुँगटा, २. श्री सीताराम शर्मा, कोलकाता, ३. श्री हरिप्रसाद कानोड़िया, कोलकाता ४. श्री राज. के. पुरोहित, महाराष्ट्र, ५. श्री बद्री प्रसाद भीमसरिया, बिहार, ६. श्री रामअवतार पोद्दार, कोलकाता, ७. श्री आत्माराम सोंथलिया, कोलकाता, ८. श्री संजय हरलालका, कोलकाता, ९. श्री दिलीप गांधी, महाराष्ट्र, १०. श्री रमेश

अखिल भारतीय समिति बैठक-
डॉ. जयप्रकाश मूंधड़ा, नन्दलाल रुँगटा, राम अवतार पोद्दार

बैठक में उपस्थित
सीताराम शर्मा, रमेश चन्द्र बंग एवं बद्रीप्रसाद भीमसरिया

हरिप्रसाद कानोड़िया, आत्माराम सोंथलिया एवं संजय हरलालका

अध्यक्ष नन्दलाल रुँगटा आगामी सत्र के सभापति हरिप्रसाद कानोड़िया के निर्वाचन पर स्वागत करते हुए।

चंद्र बंग, महाराष्ट्र, ११. डॉ. जय प्रकाश मूंधड़ा, महाराष्ट्र, १२. श्री राम निवास चोटिया, कोलकाता, १३. श्री कमलेश नाहटा, मध्य प्रदेश, १४. श्री के. के. डोकानियां, कोलकाता, १५. श्री मनोज कुमार अग्रवाल, कोलकाता, १६. श्री अरुण कुमार अग्रवाल, बिहार, १७. श्री जुगल किशोर अग्रवाल, बिहार, १८. श्री प्रदीप कुमार सुरेका, बिहार, १९. श्री अशोक खेमका, बिहार, २०. श्री एस. एल. डोकानियां, कोलकाता, २१. श्री राजेश कुमार पोद्दार, कोलकाता, २२. श्री प्रभात अग्रवाल, मध्य प्रदेश, २३. श्री प्रकाश पसारी, झारखंड, २४. श्री पुरुषोत्तम शर्मा, झारखंड, २५. श्री बाबूलाल विजयवर्गीय, झारखंड, २६. श्री पवन कुमार चांडक, झारखंड, २७. श्री प्रदीप कुमार चौधरी, झारखंड, २८. श्री रमेश खिरवाल, झारखंड, २९. श्री अनिल मुरारका, झारखंड, ३०. श्री प्रहलाद शर्मा, बिहार, ३१. श्री विजय कुमार केडिया, उड़ीसा, ३२. श्री हजारी मल ओझा, उड़ीसा, ३३. श्री अशोक कुमार तुलस्यान, बिहार, ३४. श्री विनोद तोदी, बिहार, ३५. श्री गोविन्द प्रसाद शर्मा, कोलकाता, ३६. श्री सुरज भान जैन, उड़ीसा, ३७. श्री जगमोहन अग्रवाल, उड़ीसा, ३८. श्री नन्दलाल सिंघानियां, कोलकाता, ३९. श्री मनोज कुमार जैन, बिहार, ४०. श्री घनश्याम शर्मा, कोलकाता, ४१. श्री बी.एल. बाहेती, कोलकाता, ४२. श्री वसन्त कुमार मित्तल, झारखंड, ४३. श्री रामपाल अग्रवाल नूतन, बिहार, ४४. श्री राधेश्याम अग्रवाल, झारखंड, ४५. श्री विष्णु पोद्दार, कोलकाता, ४६. श्री कैलाश पति तोदी, कोलकाता, ४७. श्री राजेश सिकारिया, बिहार, ४८. श्री कमल नोपानी, बिहार, ४९. श्री विजय खेमका, बिहार, ५०. श्री द्वारकादास बांगड़, महाराष्ट्र, ५१. श्री विजय कुमार, बिहार, ५२. श्री विश्वनाथ केडिया बिहार, ५३. श्री नन्द किशोर अग्रवाल, कोलकाता, ५४. श्री एस. के. अग्रवाल, कोलकाता, ५५. श्री सुभाष अग्रवाल , नागपुर ५६. श्री विश्वम्भर नेवर, कोलकाता, ५७. श्री महेश जालान, बिहार, ५८. श्री ललित गांधी, महाराष्ट्र, ५९. श्री भारत गुर्जर, महाराष्ट्र, ६०. श्री नेमीचन्द पोद्दार, महाराष्ट्र, ६१. श्री घनश्याम बिसावा, महाराष्ट्र, ६२. श्री मुकुन्द दास माहेश्वरी, महाराष्ट्र, ६३. श्री रमेश गर्ग, मध्य प्रदेश, ६४.

चुनाव अधिकारी नन्दलाल सिंघानिया हरिप्रसाद कानोड़िया को सर्वसम्मत सभापति घोषित करते हुए।

समाज के बच्चे आर्थिक अभाव में उच्च शिक्षा से वंचित न रहें, इस हेतु सम्मेलन ने दो करोड़ रुपयों का उच्च शिक्षा कोष बनाने का निर्णय लिया है। अब तक एक करोड़ 20 लाख रुपयों का आश्वासन हमें प्राप्त हुआ है।

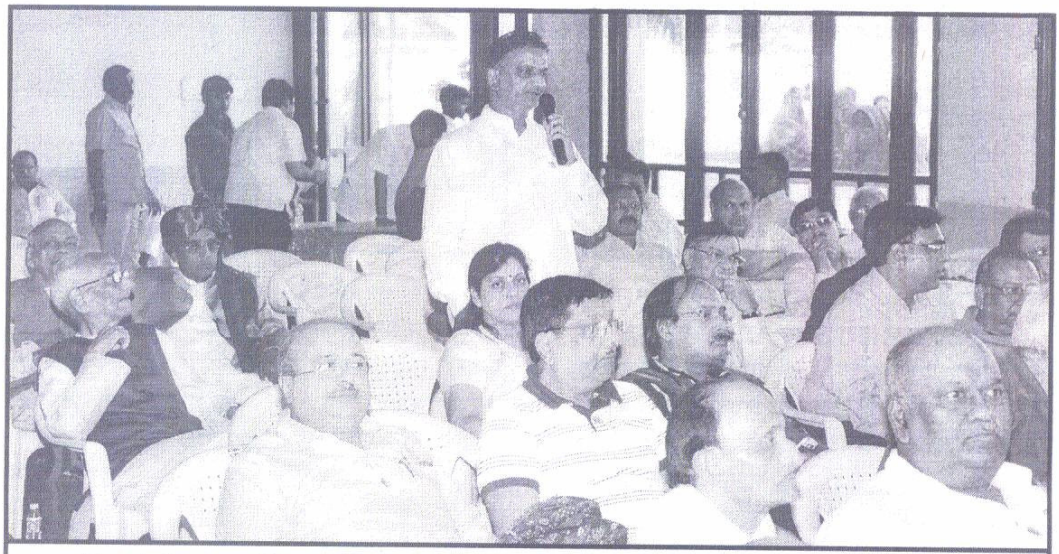

परिचर्चा में भाग लेते हुए बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन अध्यक्ष श्री कमल नोपानी।

श्री पुरुषोत्तम संघी, मध्य प्रदेश, ६५. श्री चमनलाल अग्रवाल, मध्य प्रदेश, ६६. श्री प्रमोद नेवटिया, झारखंड, ६७. श्री बनवारीलाल मारोठी, महाराष्ट्र, ६८. श्री ओ.पी, बिहार, ६९. श्री सतीश खण्डेलवाल, महाराष्ट्र, ७०. श्री सजय वी पालीवाल, महाराष्ट्र, ७१. श्री सतीश बोथरा, महाराष्ट्र, ७२. श्रीमती सुषमा अग्रवाल, महाराष्ट्र, ७३. श्री गणेश बजाज, महाराष्ट्र, ७४. श्री आजीनका साकला, महाराष्ट्र, ७५. श्री रवि काबड़ा, महाराष्ट्र, ७६. श्री जय प्रकाश रामावत, महाराष्ट्र, ७७. श्री कन्हैया एस. बजाज, महाराष्ट्र, ७८. श्री निर्मल कुमार जालान, बिहार, ७९. श्री रविन्द्र ए. गांधी, महाराष्ट्र, ८०. श्री संतोष अग्रवाल, छत्तीसगढ़, ८१. श्री रामअवतार हुरकत, महाराष्ट्र, ८२. श्री अनिल गांधी, महाराष्ट्र, ८३. श्री शंकरलाल जालान, महाराष्ट्र, ८४. श्री मथुराप्रसाद गोयल, महाराष्ट्र, ८५. श्री बी. सी. भरतिया, महाराष्ट्र, ८६. श्री अशोक बलदुवा, महाराष्ट्र, ८७. श्री मधुर एस. बंग, महाराष्ट्र, ८८. श्री वीरेन्द्र धोका, महाराष्ट्र, ८९. श्री महेश आर बंग, महाराष्ट्र, ९०. श्री मधुसुदन सारडा, महाराष्ट्र, ९१. विजय पुगलिया, महाराष्ट्र, ९२. श्री शिव कुमार, बिहार, ९३. श्री बाल कृष्ण माहेश्वरी, कोलकाता, ९४. श्री राज कुमार मूधड़ा, झारखंड, ९५. मंगतुराम अग्रवाल, उड़ीसा, ९६. श्री के. जी. शर्मा, महाराष्ट्र।

बैठक में सर्वप्रथम सर्वसम्मति से गत बैठक की कार्यवाही पारित की गई।

सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रुँगटा ने देश से आये सभी सदस्यों का स्वागत करते हुए सुन्दर व्यवस्था के लिए महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि मारवाड़ी समाज के लिए महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र का पुराना सम्बन्ध है। क्योंकि सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष स्व. बृजलाल बियानी यहीं के थे। उन्होंने कहा कि मुझे बताया गया है कि महाराष्ट्र विधानसभा में 13 मारवाड़ी सदस्य हैं यह हमारे लिए गौरव की बात है। आपने बताया कि समाज के बच्चे आर्थिक अभाव में उच्च शिक्षा से वंचित न रहें, इस हेतु सम्मेलन ने दो करोड़ रुपयों का उच्च शिक्षा कोष बनाने का निर्णय लिया है। अब तक एक करोड़ 20 लाख रुपयों का आश्वासन हमें प्राप्त हुआ है। आपने सभी से इसमें सहयोग करने की अपील की। आपने कहा कि समाज के सामने नई-नई चुनौतियां आ रही हैं जिनसे हमें मुकाबला करना है। दिखावा व प्रदर्शन को बड़ी समस्या बताते हुए आपने कहा कि अब यह समस्या पूरे भारत वर्ष में भी तेजी से फैल रही है। आपने आशा जताई

श्री हरिप्रसाद कानोड़िया सभापति निर्वाचित

श्री हरिप्रसाद कानोड़िया

महामंत्री रामअवतार पोद्दार का 72वां जन्म दिवस नागपुर में धुमधाम से मनाया गया। महाराष्ट्र प्रान्तीय अध्यक्ष डॉ. जयप्रकाश मूंधड़ा बधाई देते हुए।

कि मारवाड़ी समाज एक जुझारू समाज है और वह इन चुनौतियों से दृढ़ता के साथ लड़ेगा, ऐसी आशा है। राजस्थानी भाषा के प्रचार-प्रसार पर बल देते हुए आपने कहा कि श्री केसरीकान्त शर्मा द्वारा लिखित राजस्थानी-हिन्दी-अंग्रेजी परिचय कोष का प्रकाशन किये जाने पर कार्य चल रहा है। श्री रतन शाह और श्री जुगल किशोर जैथलिया इस पर कार्य कर रहे हैं। आपने आशा जताई कि आगामी जनवरी में होने जा रहे अधिवेशन के पहले इसके प्रकाशन हो जायेगा। इसके अलावा सम्मेलन के 75 वर्षों के इतिहास को पुस्तकाकार रुप में प्रकाशित करने की योजना पर चर्चा करते हुए आपने कहा कि इसका दायित्व सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष एवं कौस्तुभ जयंती समारोह के चैयरमेन श्री सीताराम शर्मा पर है।

राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार ने अप्रैल 2010 से अब तक हुए कार्यों का ब्यौरा रखते हुए बताया किसम्मेलन के वर्तमान सत्र में अब तक 141 संरक्षक, 171 आजीवन तथा 154 विशिष्ट सदस्य बन चुके हैं। सम्मेलन के संविधान के अनुसार, इससे प्राप्त

युवाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत 85 वर्षीय बाबा

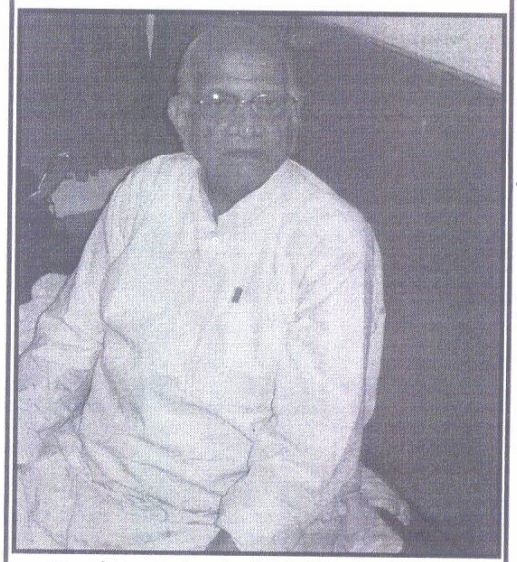

बिहार के सहरसा से ८५ वर्षीय श्री विश्वनाथ केड़िया अखिल भारतीय समिति की बैठक में भाग लेने हेतु कोलकाता होते हुए नागपुर पहुँचे थे। उन्होंने बताया कि वे करीब ४० वर्षों से सम्मेलन से जुड़े हैं। इस उम्र में भी सम्मेलन के प्रति उनका लगाव तथा बैठक में उपस्थिति युवाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत कही जा सकती है।

श्री कानोड़िया को बधाई देते हुए बैठक में उपस्थित विभिन्न प्रान्तों से आये प्रतिनिधिगण

राशि को फिक्स डिपाजिट करा दिया गया है।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया ने अप्रैल 2010 से अक्टूबर 2010 तक का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया।

बैठक में प्रस्तावित नये सत्र (2011-13) हेतु सभापति के चुनाव की प्रक्रिया शुरु होने के पहले

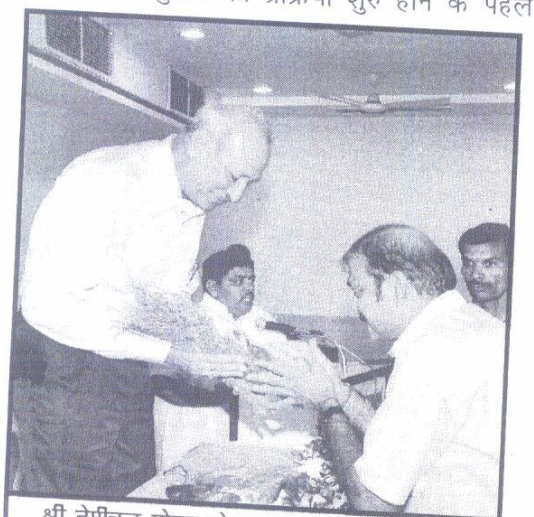

श्री नेमीचन्द पोद्दार के महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री निर्वाचित होने पर बधाई देते हुए

अध्यक्ष ने कहा कि सम्मेलन की परम्परा के अनुसार, सर्वसम्मति से सभापति का चुनाव हो तो, बेहतर होगा। महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. जय प्रकाश मूँधड़ा एवं निवर्तमान अध्यक्ष रमेश बंग ने भी सर्वसम्मत से चुनाव की बात कही। श्री विश्वम्भर नेवर ने अपना नाम वापस लेने सम्बन्धित लिखित पत्र चुनाव अधिकारी श्री नन्दलाल सिंहानिया को सौंपा। श्री सिंहानिया ने श्री हरिप्रसाद कानोड़िया को जिन्हें प्रायः सभी प्रांतों का समर्थन प्राप्त था, सर्वसम्मति से सभापति घोषित किया। इसके साथ ही श्री कानोड़िया को उपस्थित सभी पदाधिकारियों और सदस्यों ने बधाई दी। श्री कानोड़िया ने कहा कि समाज में अच्छाईयां और बुराईयां दोनों है। मेरा प्रयास बुराईयों को दूर करने का रहेगा।

बैठक में अन्य सदस्यों के विचार इस प्रकार रहे-

श्री रमेश बंग (महाराष्ट्र) - देश के वर्तमान राजनैतिक हालात में हमें बंटकर नहीं, एकजुट होकर कार्य करना होगा। हम जैन, ओसवाल, माहेश्वरी, खण्डेवाल, अग्रवाल में न बंटकर हम सब मारवाड़ी

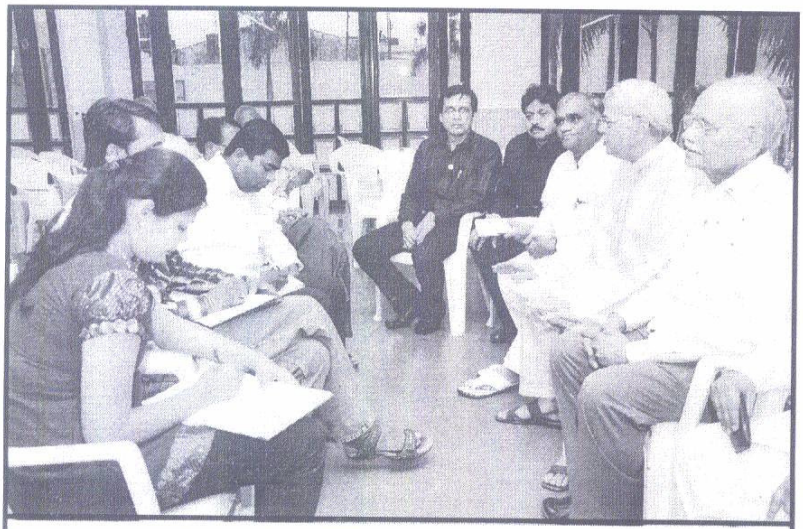

संवाददाता सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए सम्मेलन पदाधिकारीगण

हैं, इस रुप में कार्य करें।

डॉ. जय प्रकाश मूँधड़ा (महाराष्ट्र) - सम्मेलन की गौरवशाली परम्परा को बनाये रखना हम सबका कर्तव्य है। काम करने में गलती हो तो गलती की तरफ अंगुली मत उठाओ बल्कि गलती कैसे सुधारी जाय, यह बताना चाहिए।

श्री दिलीप गांधी, सांसद (महाराष्ट्र) - समाज में एकता जरूरी है। राजनीति के क्षेत्र में समाज आगे आए। हमें ऐसे कार्य करने चाहिए जिससे समाज में एकता का संदेश जाए।

श्री राज के. पुरोहित (महाराष्ट्र) - देश के समग्र विकास की बात करने वाली देश की एक मात्र संस्था है सम्मेलन। सम्मेलन ने पूरे देश के मारवाड़ियों को जोड़ने का कार्य किया है। 75 वर्षों तक समाज के विकास के लिए सम्मेलन का कार्य करते रहना एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

श्री कमलेश नाहटा (जबलपुर) - एकल सदस्यता जल्द से जल्द लागू हो।

श्री संतोष अग्रवाल (रायपुर) - पूरे देश में मारवाड़ी युवा मंच अच्छा कार्य कर रहा है। 40-45 वर्ष की उम्र के बाद भी लोग वहां काम कर रहे हैं। संविधान के अनुसार ऐसे लोग युवा नहीं रह जाते हैं। उन्हें सम्मेलन से जुड़कर कार्य करना चाहिए।

श्री गोविन्द शर्मा (कोलकाता) - सदस्यता बढ़ाओ अभियान जोर-शोर से चलाया जाय। एकल सदस्यता का समाधान जरूरी है। केन्द्रीय पदाधिकारी प्रान्तों में जायें तो सदस्यता बढ़ेगी।

श्री कमल नोपानी (बिहार) - उपाध्यक्षों को यह दायित्व दिया जाना चाहिए कि वे अपने अंतर्गत के प्रांतों का दौरा करें।

श्री बसंत मित्तल (झारखण्ड) - आने वाले दो वर्ष में देश के सभी राज्यों में प्रांतीय शाखाएं हों।

श्री विजय केडिया (उड़ीसा) - केन्द्रीय सम्मेलन राष्ट्रीय स्तर पर प्रांतों को कार्यक्रम दे।

महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के मंत्री श्री ललित गांधी बैठक में उपस्थित प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए

श्री दिलीप गांधी सांसद प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए।

प्रांत मजबूत होंगे तो केन्द्रीय सम्मेलन मजबूत होगा–सीताराम शर्मा

श्री अरुण अग्रवाल (बिहार) – सम्मेलन का एक ऐसा मुख्यालय होना चाहिए जहां से पूरे देश में सम्मेलन की गतिविधियों का संचालन हो सके।

श्री अशोक खेमका (बिहार) – 13 राज्यों में सम्मेलन की प्रांतीय शाखाएं हैं। बिहार की तरह उनमें भी शिक्षा समिति का गठन हो।

श्री महेश जालान (बिहार) – केन्द्रीय कार्यालय द्वारा एक या दो कार्यक्रम राष्ट्रीय स्तर पर लिये जाने चाहिए।

श्री बिनोद तोदी (बिहार) – बिहार सबसे सक्रिय प्रांत है।

राष्ट्रीय कार्यकारिणी में सभी प्रांतों से अधिकाधिक लोगों को लिया जाना चाहिए।

श्री रामपाल अग्रवाल, नूतन (बिहार) – सिद्धांतों

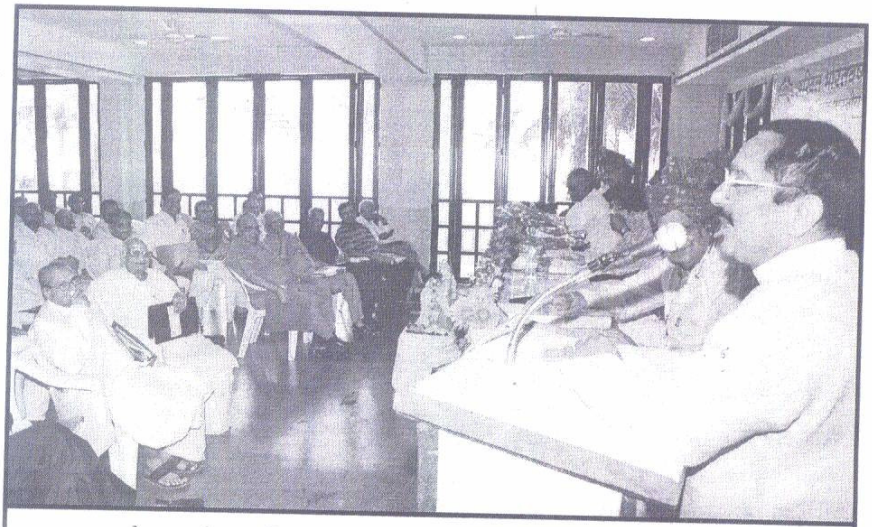

सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं महाराष्ट्र सरकार के पूर्व मंत्री श्री राज पुरोहित बैठक को सम्बोधित करते हुए।

मारवाड़ी युवा मंच, महाराष्ट्र प्रान्तीय सभा की बैठक का मंच

पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए। इसके बिना संगठन नहीं चल सकता।

पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने कहा कि मैं बराबर यह कहता आया हूँ कि सम्मेलन प्रांतों, जिलों एवं नगर शाखाओं में बसता है। अखिल भारवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का अपना कार्यक्षेत्र विशेष नहीं है। केन्द्रीय सम्मेलन का मुख्य कार्य नीति निर्धारण एवं राष्ट्रीय कार्यक्रम तैयार करना, संगठन को मजबूत करना एवं संवैधानिक प्रावधानों के अनुरूप सम्मेलन कार्य करे इसकी व्यवस्था करना है। प्रांत अगर मजबूत होंगे तो केन्द्रीय सम्मेलन मजबूत होगा। सम्मेलन एकल सदस्यता के लिए कार्य कर रहा है। सर्वभारतीय स्तर पर अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के नाम से प्रांतों को गठित किया जाये।

बैठक में बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा २२वां राष्ट्रीय अधिवेशन जनवरी २०११ में पटना में आयोजित कराये जाने का अनुरोध स्वीकृत हुआ।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुँगटा ने कहा कि चूंकि अध्यक्ष के रूप में अखिल भारतीय समिति की यह मेरी आखिरी बैठक है। इसलिए वे सभी सदस्यों का हर प्रकार के सहयोग तथा मार्गदर्शन के लिए आभार प्रकट करते हैं।

अध्यक्ष को धन्यवाद के साथ बैठक समाप्त हुई।◆

दोहे

चार पैसे क्या हुए भूल गये व्यवहार।
सारे रिश्तेदार अब लगने लगे गंवार।।
सुख में हर कोई साथ है, दुख में हैं सब दूर।
मुख अपने ही मोड़ते, कैसा ये दस्तूर।।
खाकर पशु का मांस वे बिल्कुल ना शरमाये।
हत्या के भागी बनें, क्या तीरथ को जायें।।
धन–दौलत की दौड़ में, मानव हुए मशीन।
केवल भौतिक सुखों के, सपने लगे हसीन।।
झेल चुकी हैं बेटियाँ, बड़े–बड़े अपमान।
अब लड़के कुंवारे फिरें, धरे रहे अरमान।।
बेटी! मेरी बात तू रख जीवन भर याद।
तेरे कंधे ही टिकी, इस घर की बुनियाद।।
आंगन सूना कर गई बिटियां गई परदेस।।
साथ में अपने ले गई, खान–पान और वेश।।
फंसे नशे में कर रहे तुम जीवन बर्बाद।
बच्चे जब इस पथ चले करोगे तब फरियाद।।
बेटी! मेरी बात तू यह भी रखना याद।
बिना नम्रता के यहाँ जीवन है बर्बाद।।

– नरेन्द्र गोयल, सुपुत्र श्री शिवकुमार गोयल
पत्रकार बीचपट्टी, पिलखुवा (गाजियाबाद)

राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक का संक्षिप्त ब्यौरा

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की वर्तमान सत्र की राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की एक आवश्यक बैठक शनिवार, १८ सितम्बर २०१० को अपरान्ह ४ बजे हिन्दुस्तान क्लब के बोर्ड रूम, कोलकाता में सम्पन्न हुई। सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रुँगटा ने बैठक की अध्यक्षता की।

बैठक में उपस्थिति इस प्रकार रही :–

१. श्री नन्दलाल रुँगटा, २. श्री रामअवतार पोद्दार, ३. श्री आत्माराम सोंथलिया, ४. श्री सीताराम शर्मा, ५. श्री संजय हरलालका, ६. श्री कैलाश पति तोदी, ७. श्री विश्वम्भर नेवर, ८. श्री मोहन लाल तुलस्यान, ९. श्री हरि प्रसाद बुधिया, १०. श्री नवल जोशी, ११. श्री संतोष सराफ, १२. श्री बालकृष्ण माहेश्वरी, १३. श्री विजय गुजरवासिया, १४. श्री भानीराम सुरेका, १५. श्री ओम प्रकाश पोद्दार, १६. श्री नन्द किशोर अग्रवाल, १७. श्री आर.एन. झुनझुनवाला, १८. श्री एस. एल. डोकानिया, १९. श्री विश्वनाथ सिंघानिया, २०. श्री नन्दलाल सिंघानिया।

गत बैठक की कार्यवाई को पारित करने के पश्चात सभापति ने बैठक के तय एजेंडों पर चर्चा करते हुए कहा कि अखिल भारतीय समिति की बैठक आगामी ३ अक्टूबर को हैदराबाद में कराने की बात थी जहां अगले सभापति का चुनाव भी किया जाना था किन्तु अपरिहार्य कारणोंवश इस मीटिंग की तारीख आगे बढ़ानी पड़ रही है। नये सभापति के चुनाव के सम्बन्ध में आपने कहा कि इस पद हेतु श्री हरिप्रसाद कानोड़िया और श्री विश्वम्भर नेवर के नाम आये हैं। आपने निष्पक्ष एवं पारदर्शी तरीके से चुनाव प्रक्रिया सम्पन्न कराने हेतु चुनाव अधिकारी के रूप में श्री नन्दलाल सिंहानिया का नाम प्रस्तावित किया।

श्री विश्वम्भर नेवर ने यह प्रस्ताव दिया कि चुनाव अधिकारी ऐसे व्यक्ति को बनाया जाय जिसका सम्मेलन से कोई सम्बन्ध ा नहीं हो। तत्पश्चात उन्होंने कहा कि जब आपने चुनाव प्रक्रिया शुरु कर दी हे तो फिर अब चुनाव अधिकारी की नियुक्ति का क्या औचित्य है? इसके अलावा आपने कहा कि चुनाव प्रक्रिया की सूचना सम्मेलन के मुखपत्र समाज विकास में प्रकाशित क्यों नहीं की गई?

इसके जवाब में सभापति श्री रुँगटा ने कहा कि चूंकि सभापति के चुनाव की प्रक्रिया सम्बन्धी सूचना सभी सदस्यों को देने का कोई प्रावधान आवश्यकता संविधान में नहीं है क्योंकि संविधान के प्रावधानों के अनुसार कोई सदस्य विशिष्ट या आजीवन सीधे तौर पर सभापति के चुनाव में भाग नहीं ले सकता। संविधान की धारा १५ के अनुसार सभापति पद के लिए नाम प्रस्तावित करने का अधिकार केवल प्रान्तीय सम्मेलनों को है। चूंकि प्रान्तीय सम्मेलन सभापति पद के लिए नाम प्रस्तावित करता है, अत: सभी प्रान्तीय अध्यक्षों को चुनाव सम्बन्धी जानकारी समयनुसार दे दी गई थी। उन्होंने बताया कि चुनाव प्रक्रिया शुरु करने की बातचीत गत कार्यकारिणी की बैठक में हो गई थी।

श्री रामअवतार पोद्दार ने कहा कि प्रान्तीय सम्मेलन सभापति का नाम प्रस्तावित करते हैं। इसकी सूचना कभी समाज विकास में प्रकाशित करने की परम्परा नहीं रही है। जो परम्परा चली आ रही है उसी के अनुरुप इस बार भी चुनाव प्रक्रिया शुरु हुई है।

श्री नेवर ने कहा कि चूंकि अध्यक्ष का चुनाव एक अहम् मामला है इसलिए अखिल भारतीय समिति की बैठक कोलकाता में कराने पर विचार करें।

इस पर सभापति ने कहा कि पश्चिम बंगाल प्रान्त ने बैठक का आतिथ्य प्रस्तावित नहीं किया है।

इसका समर्थन करते हुए पश्चिम बंगाल के अध्यक्ष श्री विजय गुजरवासिया ने कहा कि प्रान्तीय मंत्री ने अखिल भारतीय समिति की बैठक कोलकाता में कराने के सम्बन्ध में पत्र दिया है यह तो मुझे पता चला है किन्तु हमनें आतिथ्य करने की बात नहीं कही है। उन्होंने स्पष्ट तौर पर अखिल भारतीय समिति के आतिथ्य का भार लेने से अस्वीकार किया।

सभापति ने बताया कि जब भी कोई राष्ट्रीय बैठक होती है चाहे वह अखिल भारतीय समिति हो या कार्यकारिणी अथवा कोई राष्ट्रीय स्तर का सम्मेलन, केन्द्रीय पदाधिकारी विभिन्न प्रान्तीय सम्मेलनों से आतिथ्य के लिये सम्पर्क करते हैं एवं प्रान्तों से प्राप्त प्रस्तावों के आधार पर निर्णय लिया जता है। कोलकाता में सम्मेलन का केन्द्रीय कार्यालय है। सम्मेलन एक राष्ट्रीय संस्था है। विभिन्न प्रान्तों में समारोहों एवं सम्मेलनों की बैठक आयोजित कर सम्बन्धित प्रांत में सम्मेलन की गतिविधियों को सक्रिय करने का अवसर प्राप्त होता है। सम्मेलन राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक भी कोलकाता से बाहर इस सिलसिले में करने का प्रयास करता है।

कौस्तुभ जयन्ती कमेटी के अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने २२ सितम्बर को कलामंदिर में आयोजित कौस्तुभ जयंती समारेह की तैयारियों की विस्तृत जानकारी दी।

बैठक में कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया ने अगस्त २०१० तक का आय–व्यय का ब्यौरा रखा।

अंत में सर्वसम्मति से इस निर्णय के साथ बैठक समाप्त हुई कि नये अध्यक्ष के चुनाव हेतु श्री नन्दलाल सिंहानिया को चुनाव अधिकारी नियुक्त किया जाये। अखिल भारतीय समिति की बैठक के स्थान व तिथि आदि निर्णय सम्बन्धी आवश्यक अधिकार सभापति को दिये गये। सभापति के धन्यवाद के साथ बैठक समाप्त हुई।◆

स्थायी समिति बैठक की संक्षिप्त रिपोर्ट

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थायी समिति सदस्यों की बैठक सोमवार, २५ अक्टूबर २०१० को सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुँगटा की अध्यक्षता में सम्मेलन भवन, २५ राजा राम मोहन राय सारणी, कोलकाता–९ में संपन्न हुई।

बैठक में उपस्थिति इस प्रकार रहीं :–

१. श्री नन्दलाल रुँगटा, २. श्री रामअवतार पोद्दार, ३. श्री आत्माराम सोंथलिया, ४. श्री हरिप्रसाद कानोड़िया, ५. श्री संजय हरलालका, ६. श्री प्रेमचन्द सुरेलिया, ७. श्री कैलाश पति तोदी, ८. श्री गोविन्द प्रसाद शर्मा, ९. श्री नंदलाल सिंघानियां, १०. श्री जुगल किशोर जैथलिया, ११. श्री घनश्याम शर्मा, १२. श्री ओम प्रकाश अग्रवाल

सभापति श्री नन्दलाल रुँगटा ने कहा कि २१ नवम्बर को अखिल भारतीय समिति की मीटिंग नागपुर में होने जा रही है जिसमें आगामी सत्र के लिए सभापति का निर्वाचन होगा। आगामी सत्र के सभापति के निर्वाचन हेतु प्रांतों ने श्री हरिप्रसाद कानोड़िया और श्री विश्वम्भर नेवर के नाम प्रस्तावित किये हैं। ९ प्रांतों ने श्री कानोड़िया के नाम और १ प्रांत ने श्री नेवर के नाम प्रस्तावित किया है। आपने कहा कि गत कार्यकारिणी की मीटिंग में सदस्यों ने श्री नन्दलाल सिंघानियां को सर्वसम्मति से चुनाव पदाधिकारी नियुक्त किया। आपने कहा कि श्री केसरी कान्त शर्मा ने राजस्थानी–हिन्दी परिचय कोष पर काम किया है। इस हेतु उन्हें ५१ हजार रुपये का पारिश्रमिक भेज दिया गया है। इसे पुस्तकाकार रुप में प्रकाशित करने की योजना है ताकि राजस्थानी भाषा का प्रचार–प्रसार हो। सदस्य बढ़ाने के मद्देनजर आपने कहा कि सदस्य सम्मेलन की रीढ़ हैं अतरू सभी तरह की सदस्यता में इजाफा हो। साथ ही आपने मौजूद सदस्यों से सदस्य संख्या कैसे बढ़े इस विषय पर राय देने का आग्रह किया? आपने कोलकाता में समाज की संख्या को देखते हुए कहा कि जिस तादाद में समाज यहां रह रहा हैं उस तादाद को देखते हुए एक और प्रचारक की नियुक्ति करने पर हमलोग विचार करें।

सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार ने महामंत्री की रिपोर्ट पढ़ी।

सम्मेलन के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया ने आय–व्यय का लेखा प्रस्तुत किया।

सदस्यता बढ़ाने हेतु नये लोगों से संपर्क, प्रचारक की नियुक्ति, केन्द्रीय कार्यालय की मरम्मत आदि विषयों पर चर्चा के साथ बैठक सम्पन्न हुई।◆

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

दीपावली प्रीति सम्मेलन

कोलकाता : हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से दीपावली प्रीति सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ स्वागत गीत द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में अन्वेशा द क्वेस्ट (अपंगों की संस्था के छात्र व छात्राओं) द्वारा नृत्य एवं गीत, गणेश वन्दना, दीपों भरी दिवाली और राजस्थानी रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित सुप्रसिद्ध उद्योगपति व समाजसेवी प्रह्लादराय अग्रवाल ने सम्मेलन द्वारा आयोजित इस दीपावली प्रीति सम्मेलन की काफी प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि मेरा मानना है कि खुशियां मनाने से ज्यादा खुशी, खुशियां बांटने में होती है। विमल कुमार पाटनी ने कहा कि दिवाली का आशय लोगों की सहायता करना है।

अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष नन्दलाल रुँगटा ने कहा कि इस प्रीति सम्मेलन का उद्देश्य यही है कि इस सम्मेलन में सभी लोग भेद भाव और मनमुटाव को मिटाकर आपस में प्यार से रहें। सम्मेलन के महासचिव रामअवतार पोद्दार ने कहा कि इस सम्मेलन द्वारा हमेशा से ही समाज सेवा मूलक कार्य किया जाता है।

सम्मेलन के भूतपूर्व अध्यक्ष सीताराम शर्मा ने सम्मेलन को इस तरह के प्रीति सम्मेलन को आयोजित करने के लिए ढेर सारी बधाइयां दीं। इनके अलावा इस मौके पर पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष विजय गुजरवासिया और सचिव रामगोपाल बागला सहित कहई सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन संजय हरलालका ने किया और समारोह की अध्यक्षता विजय गुजरवासिया ने की। विजय डोकानिया ने धन्यवाद ज्ञापन किया।◆

राजस्थान का अग्नि-नृत्य

- सूर्यशंकर पारीक

भारत के सभी अंचलों में अपनी–अपनी विशिष्टता के साथ लोक–नृत्यों का प्रचसन गै नृत्यों की आदि–परंपरा वैदिक काल से जोड़ी जाती है। राजस्थान में भी लोक–नृत्यों के अनेक प्रकार प्रचलित हैं, जो अवसर और ऋतु के अनुसार समय–समय पर प्रदर्शत होते रहते हैं और जिनका आकर्षण किसी भी महत्वपूर्ण नृत्य से कम नही हैं।

राजस्थान में एक लोक–नृत्य आग के धधकते अंगारों पर किया जाता है, अत: इसका नाम अग्नि–नृत्य भी है। इस नृत्य का उद्‌गम बीकानेर जिले के कतरियासर ग्राम से हुआ। इसके प्रदर्शक–नर्तक जसनाओथी–संप्रदाय के मतानुयायी जाट सिद्ध कबीले लोग है। यह नृत्य जसनाथी–संप्रदाय के विशेष पर्वो, जागरणों तथा जसनाथी–संप्रदाय के विशेष पर्वो, जागरणों तथा जसनाथी–गृहस्थ के घर किसी सामयिक औसर–मौसर पर प्रदर्शत किया जाता है या फिर इसी निमित्त आयोजित आयोजनों में इसका प्रदर्शन होता है।

यह नृत्य बीकानेर राज्य के आमंत्रित बड़े–बड़े राजकीय अतिथियों, ब्रिटिशकालीन अफसरों और देशी–विदेशी राजा–महाराजों के सम्मान में राजकीय स्तर पर अनेकों बार बीकानेर के जूनागढ़ (पुराना किला) में प्रदर्शित हुआ है। जोधपुर में भी इसका एक बार वृहद प्रदर्शन हुआ, जिसको देखने के लिए अपार जनसमूह उमड़ पड़ा।

पिछले वर्षों राजस्थान सरकार ने राजस्थान स्थापना दिवस पर सांस्कृतिक आयोजनों में राज्य के अनेक लोक–नर्तकों को आमंत्रित किया, जिनमें जाट–सिद्ध कबीले का प्रमुख स्थान था।

यह नृत्य बीस–तीस मन लकड़ियों को जला कर उनके अंगारों पर सफलतापूर्वक किया जाता है। अंगारों के ढेर का माप सात फुट लम्बा, चार फुट चौड़ा एवं तीन–चार फुट के लगभग ऊँचा होता है। सुविधानुसार यह माप संकीर्ण अथवा विस्तृत भी किया जा सकता है।

नृत्य के साथ गायन–वादन भी चलता है। वाद्यों में नगाड़े की जोड़ी और मजीरों की प्रमुखता रहती है। इनका नगाड़ा–मजीरा–वादन निराला होता है और संगीत–लय भी बड़ी ही दुर्बोध्य, किन्तु कर्ण–प्रियहोती है। गायकमंडली छ: आदमियों से दस आदमियों तक की होती है। मुख्य गायक नगाड़ा जोड़ी को हथेली से बजाता हुआ ओंकार ध्वनि जैसा आलाप करता है, अन्य गायक दो श्रेणियों में विभक्त होकर मजीरों को बजाते हुए आलाप को उठाते हैं। इनके गोय पद सिद्द जसनाथ एवं सिद्ध रुस्तम के सबद होते है। इनके तीन सबद गा चुकने के बाद धूने (अग्नि–पूज्य) में इष्ट मनौती के लिए शुद्ध घृत का हवन किया जाता है, जिसे ये लोग जिम्मों जागतो करना कहते हैं। धूने के चारों ओर पानी

छिड़क कर जमीन गीली कर दी जाती है। छिड़काव से रेत उड़ना बन्द हो जाता है तथा जमीन पक्की हो जाती है, जिससे नाचने में सुविधा होती है।

उक्त प्रक्रिया के पश्चात् रुस्तम जी के चौथे सबद का गायनारंभ होता है, जो नाचणियां सबद कहलाता है। इसी पद गायन के साथ जाट–सिद्ध युवक नाचने को उठते है और फत्ते रै फत्ते की प्लुत–ध्वनि में आवाज करते है, जिसका आशय है कि इष्ट हमें विजय प्रदान करे और तत्पश्चात् नृत्यकार अपनी कलापूर्ण मुद्राओं में अभिनय करने लगते है। इनके ये तौर–तरीके बड़े ही भावपूर्ण एवं आकर्षक होते है।

नर्तक थोड़ी देर सादी जमीन पर नगाड़ों के आगे नाचते रहते हैं। इनकी भाव–विभीरता उस समय देखते ही बनती है। जैसे ही गायक रागालाप तथा नगाड़ों की ताल का उदात्त–परिवर्तन करता है, वैसे ही ये लोग पदक्षेप के साथ उस विशाल अग्नि–ढेर में क्रमश प्रवेश कर उस में से फिर बाहर निकलने लगते हैं। उस समय यह दृश्य ऐसा लगाता है मानों अग्निशिखाओं से मानव–देह प्रकट हो रही हों। घूमती हुई दो पत्ती की चक्की जैसे चक्राकार प्रतीत होती है, वैसे ही यह दृश्य आँखों के सामने प्रकट होता है। किन्तु नर्तकों को नगाड़े की थापी का बड़ी ही सावधानी के साथ ध्यान रखना पड़ता है। कलाकुशल नर्तकों की साहसिकता का ही यह कार्य हैं, क्योंकि थापी चूक जाने से जलने का भय बराबर बना रहता है। नौसिखिये नर्तक तो सादी जमीन पर ही अपनी भावपूर्ण मुद्राओं का प्रदर्शन करते हैं।

अंगारो को हाथ में लिए रखना, छोटी–छोटी चिनगारियों को मुँह में डाल कर दर्शकों की ओर फेंकना, बड़े–बड़े प्रज्वलित अंगारों को दाँतों से पकड़े रखना और फूँ–फूँ कर पतगों छोड़ने का प्रदर्शन करना, अग्नि–ढेर में बैठ कर तथा अंगारे को हथेली में रख कर मतीरा–फोड़ने का प्रदर्शन करना और पैरों से साँड़ की तरह अग्नि ढेर को कुरेदना इस नृत्य की आश्चर्यजनक भाव–मुद्राएँ हैं।

यह नृत्य रात्रि में ही आयोजित होता है। एक रात में इनके तीन–तीन चार–चार दौर हो जाते हैं। जोधपुर–बीकानेर मंडलों में जसनाथ मतानुयायियों की बहुलता है, इसलिए उधर के लोगों के लिए यह नृत्य अभूतपूर्व होकर भी अज्ञात वस्तु नहीं है, शहरी लोगों को ही इस का पता नहीं।

मतावलम्बियों एवं नर्तकों की मान्यता है कि सिद्ध जसनाथ तथा सिद्ध रुस्तम की अनुकंपा से ही इनकी अग्नि से रक्षा होती है। जो भी हो, जिस व्यक्ति ने इस नृत्य को देखा है, उसकी आँखें विस्मय से विस्फारित हुए बिना नहीं रहीं।

देश में इस प्रकार के अनेक प्रभावशाली नृत्यों का प्रचलन है, किन्तु उचित अन्वेषण, संवर्धन तथा प्रोत्साहन के अभाव में ये प्रकाश में नहीं आ पाये है। संस्थाओं और मनीषियों का ध्यान इस ओर जाना अपेक्षित हैं।◆

कविता :

आनन्दित है पल–पल जीवन का

– संदीप जैन, वीरपुर

दुःख के सागर सूख चुके अब, सुख की नदियाँ बहती है,
आनन्दित है पल–पल जीवन का, संतों की वाणी कहती है।
सम हैं हम तो, विषम है क्या, संयम से आगे बढ़ जायें,
हर्षित कर हर प्राणी को हम, शिखरों पर चढ़ते जायें।
श्रम करते रहना ही जीवन, श्रम से ही खिलते हैं सुमन,
हरे–भरे इस चमन की कलियाँ, अपने रंगों में चहकती है,
आनन्दित है पल–पल जीवन का, संतों की वाणी कहती है।
भक्ति–भाव से भरा हुआ मन, गुरूवर के चरणों में समर्पित है,
चिन्ता क्या, हर चिन्तन ही अब तो, श्रद्धा–सेवा रूप में अर्पित है।
सब संतों को शत्–शत् वंदन है, हर श्रावक का अभिनन्दन है,
निष्ठामय सुरभित है सौरभ, 'मलयज' की माया सम रहती है,
आनन्दित है पल–पल जीवन का, संतों की वाणी कहती है।

चिट्ठी आई है :

"हमें अपनी सोच बदलनी होगी"

जुलाई–अगस्त अंक पढ़ा। शम्भु चौधरी की अपनी बात मर्मस्पर्शी है "आज समाज में ऐसे तत्व (स्वार्थी) ज्यादा सक्रिय नजर आते है जो खुद तो बीमार है ही अपनी हरकतों से समाज को भी अस्वस्थ करने में लग जाते हैं।" काश समाज सबकी बात समझता तो बात बनती।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुँगटा के विचार सदा से ही समाज के लिए प्रेरणादायी रहे हैं। इनकी यह बात **"हमें अपनी सोच बदलनी होगी"** कि अयोग्य व्यक्ति के बगल में खड़े होकर खुद को सम्मानित समझने की जगह समाज को योग्य व्यक्तियों की बगल में बैठकर समाज को सम्मानित करने की योजना को मूर्तरूप प्रदान करना होगा–कान खोलने वाली और गौर करने वाली है। धार्मिक आयोजन घटती आस्था और बढ़ता दिखावा–संगोष्ठी में श्री सीताराम शर्मा और गीतेश शर्मा के विचार खोज परक है। आस्था वास्तव में घटती जा रही है पर पाखंड बढ़ रहा है।◆

जब राजेन्द्र बाबू ने राजस्थानी लोक-गीत सुने!

''ताबड़े मैं मेह बरसै, भूत–भूतणी परणी जै''

– अक्षयचन्द्र शर्मा

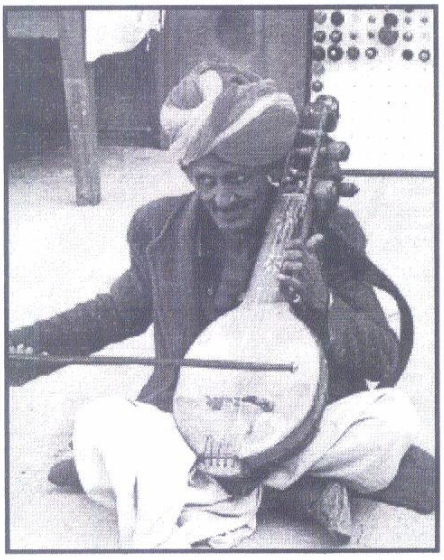

धूप में जब वर्षा होती है तो भूत व भूतणी का विवाह होता है। मेरे मुँह से जैसे ही ये शब्द निकले कि डॉ० राजेन्द्र बाबू कहने लगे– हमारे इधर भी कुछ इसी प्रकार का विश्वास है। धूप में वर्षा होती है तो सियार–सियारी का विवाह होता है। सारे देश के भीतर एक ही विश्वास की धारा प्रवाहित है। भेद ऊपर–ऊपर है, भीतर एकता का स्त्रोत है। यों कहते हुए वे कुर्सी पर बैठ गये। सावन के दिन थे। शिमला शैल–शिखर की समझौता–वार्ता टूट गई थी और राजेन्द्र बाबू स्वास्थ्य लाभ के लिए वहाँ से सीधे पिलानी आये हुये थे। सुबह घूम करके वे लौटे थे। जैसे ही वे बंगले के अहाते में पहुँचे, बौछार शुरू हो गई थी। सूरज की सुनहरी धूप में पानी की बूँदें नाचती हुई सुन्दर लग रही थीं। मैं सोच रहा था, मेरी जरा–सी बात, राजेन्द्र बाबू के लिए समग्र राष्ट्र के विश्वास की एकता की उद्घोषणा बन गई। यों कहते–कहते वे अपनी ऊँची नीची धोती में उलझे काँटों को निकालने लगे। काँटा भी राजस्थान का खास काँटा, टिपिकल राजस्थानी। एक ओर से छुड़ावे तो दूसरी ओर लग जावे। मैंने कहा–यह वह भूरट का काँटा था, जिसकी विशेषता के कारण औरंगजेब बीकानेर के राजा को भूरटिया राजा कहकर पुकारता था। यह काँटा विश्वामित्र की नूतन सृष्टि की याद दिलाता है। कविवर रामनरेश त्रिपाठी ने भी लिखा है–ऊँट भरूँट हैं गाधि–सुअन की याद दिलाते।

थोड़ी–सी इधर–उधर की बातें हुई। राजेन्द्र बाबू से नया मिलने वाला भी यह सोचता है कि जैसे वे उसके अपने हैं। इतना निश्छल व्यवहार, इतना आत्मीय वातावरण पाकर मैं भी धन्य हो गया। मुझे क्षणभर को भी यह मालूम नहीं हुआ कि मैं देश के एक वरिष्ठ नेता, सम्मान्य राष्ट्रपति और भारत की महान् वरद विभूति के पास बैठा हूँ। वे मेरी बातें इस प्रकार सुन रहे थे कि जैसे उनके लिए नई हों और काम की हों। ऐसा निरभिमान स्नेह कहाँ मिल पाता है।

उन दिनों राजेन्द्र बाबू बहुत व्यस्त थे। देश भर से तार आ जा रहे थे। कुछ लोग फाँसी के पास बैठे थे और राजेन्द्र बाबू उनको बचाने के लिए चारों ओर तार पर तार दे रहे थे और स्वास्थ्य लाभ के दिनों में भी अपने कर्तव्य में जुटे हुए थे। इस व्यस्तता के होते हुए भी उन्होंने मुझे दूसरे दिन और समय दिया। समय ही नहीं दिया, प्रश्नों का उत्तर देना भी सहर्ष स्वीकार कर लिया।

मैं दूसरे दिन पूरी तैयारी के साथ पहुँचा। मेरे साथ में पिलानी कॉलेज के विद्यार्थी श्री गणेशमल जी वैद भी थे। डॉ० राजेन्द्र बाबू, उनकी बड़ी बहन, उनके निजी सचिव श्री मथुरा बाबू आदि कमरे में आ गये। घण्टे से ऊपर समय लग गया। राजेन्द्र बाबू मेरे प्रश्नों का उत्तर देते रहे। शब्दों में हृदय की स्वच्छता व जीवन की गंभीर अनुभूति झलक रही थी। वाणी में सरल सहज प्रवाह, सादगी का सौन्दर्य और स्पष्टता की आभा थी।

मैने सहज भाव से प्रश्न किया–प्राय सभी लोगों का ख्याल है कि कांग्रेस हाई कमांड में आपको छोड़कर अहिंसा पर पूर्ण विश्वास किसी का नहीं। उनके लिए अहिंसा राजनिति का एक हथियार–मात्र है। अहिंसा जीवन का साध्य नहीं। प्रश्न सुनते ही वे गंभीर हो गये। कहने लगे–ऐसा तो नहीं होना चाहिए। हम सबको अहिंसा में पूर्ण विश्वास है। सबकी मैं क्या कहूँ। मेरे लिए तो अहिंसा साधन नहीं, साध्य है। और उनके चेहरे पर एक दृढ़ता का भाव चमक उठा।

मैं प्रश्न करता रहा, राजेन्द्र बाबू स्नेह के साथ उत्तर देते रहे और उनके हाथ अंकुठित गति से तकली को घुमाते रहे। मुझे कबीर की पंक्ति याद आई। हम घर सूतत नहिं नित ताना। हम घर सूत तनहि नित ताना।

समुचित उत्तर पाकर मेरी जिज्ञासाएँ शान्त हो गई। अपने जीवन में मैं एक प्रकार का स्वर्गिक उल्लास अनुभव कर रहा था। मैंने प्रणाम किया और साथ ही आज्ञा मांगी और चाहा कि रात को राजस्थानी भाषा के लोक गीतों का कार्यक्रम रहे। राजेन्द्र बाबू की स्वीकृति पाकर मैं फूला न समाया।

राजस्थानी भाषा के लोक गीतों के श्रेष्ठ संग्राहक श्री गणपति स्वामी को लेकर मैं रात को पहुँच गया। श्री राजेन्द्र बाबू सभी के साथ जमकर बैठ गये। लोक गीतों का प्रवाह बहा। सभी तरह के लोक गीत। पीपणी पणिहारी से लेकर विणजारे भैरुजी तक के गीत। श्री गणपति स्वामी अपनी मधुर वाणी से राजस्थानी लोक गीतों का सुधा–प्रवाह बहाते रहे। मैं बीच–बीच में भावार्थ समझाता जा रहा था। सुनने के बाद श्री राजेन्द्र बाबू ने गद्‌गद वाणी में कहा– हमारे घर में कितना रस है। कितना साहित्य भरा पड़ा हैं। हम उसकी ओर नहीं देखते और अंग्रेजी कवियों में लगे रहते हैं। इस प्रकार के सहजोद्‌गार को सुनकर हम मंत्र मोहित– से हो रहे थे। दस के ऊपर बजने को आये। मथुरा बाबू ने मुझे कहा– अब आप लोग जाइये। देर हो गई है।

हमने चरण स्पर्श किया और उन के मधुर संस्मरणों के अनर्घ धन को कृपण की तरह छिपाये चल पड़े।◆

दिनांक : 25 नवम्बर 2010

भंवरमल सिंघी समाज सेवा पुरस्कार
एवं
सीताराम रुँगटा राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार

सभी निर्णायक मंडल सदस्यों की सेवा में

महोदय,

सीताराम रुँगटा राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार एवं भंवरमल सिंघी समाज सेवा पुरस्कार के विचारार्थ एक संयुक्त बैठक का आयोजन दिनांक : 4 दिसंबर 2010 शनिवार को अपराह्न 3.30 बजे राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुँगटा के कार्यालय एक्सप्रेस टावर, 8 तल्ला, 42ए, शेक्सपीयर सरणी, कोलकाता–17 में किया गया है।

सभी निर्णायक मंडल सदस्यों से सादर उपस्थिति हेतु निवेदन है।

संयोजक
सीताराम रुँगटा राजस्थानी भाषा
साहित्य पुरस्कार

(शम्भु चौधरी)

संयोजक
भंवरमल सिंघी समाज
सेवा पुरस्कार

(संजय हरलालका)

Comprehensive and Exclusive

Business Economics

... Truly reflecting global aspirations!

Subscribe

100% Bargain

Business Economics Subscription Form

Yes! I would like to subscribe Business Economics

Subscribers may send choice of books valued equal to subscription

Tick	Term	No. of Issues	Price you pay	Gift Value	Saving	US $	UK £	Gift Option
☐	3 Years	72	1080/-	1080/-	1080/-	144	72	☐ Tie + Scarf **OR** ☐ Books ☐ Any One Book out of above (For International)
☐	1 Year	24	360/-	360/-	360/-	48	24	☐ Scarf **OR** ☐ Books ☐ Any One Book out of above (For International)

Name : Mr./Ms. ....

Address ....

.... City/District: ....

State .... Country .... Pin Code : ☐☐☐☐☐☐

E-mail : .... Mobile : .... Landline : .... STD CODE

REMITTANCE DETAILS :

Enclosed Cheque / DD No .... dated .... for Rs .... drawn on ....

In favour of CONTEMPORARY NEWS PRIVATE LIMITED

Signature: .... date: ....

Mail your Cheque / DD to : Mr. Pramod Kr. Singh, General Manager, Business Economics, 3, Middle Road, Hastings, Kolkata - 700 022, India
Ph : 033 - 2223 0335/0368, Mobile : 93398 [illegible], E-mail : subscriptions@businesseconomics.in

For Subscription enquiries contact . **Kolkata** : Ms. Sumita Agarwal : 033 2223-0368 • **Mumbai** : Rajendra Singh : 93208 73700
Chennai : Ms. S. Bhuvaneshwari : 044-4217 1320, 98416 54257 • **New Delhi** : Lala P. Yadav : 98102 10095 • **Kohima** : Povotso Lohe : 94360 05889

जी, मैं मारवाड़ी हूँ

-:: स्व. रामेश्वर टाँटिया ::-

कहा जाता है कि लगातार एक दशक तक किसी एक स्थान पर रह जाने से वहाँ के पूरे नागरिक अधिकार मिल जाते हैं, यदि जन्म भी उसी स्थान का हो, तब तो किसी प्रकार के भेद–भाव का प्रश्न ही नहीं उठता। इसी परम्परा में, विश्व के सबसे धनी देश अमेरिका और स्वीडन को अपने यहाँ बसे हुए भारत के सिक्खों और अफ्रीका के नीग्रो को पूरे नागरिक अधिकार देने पड़े हैं। मैंने अमेरिका के सैनफ्रांसिस्को और लॉस एंजल्स में देखा कि वहाँ लाखों चीनी, जापानी, नीग्रो और भारतीय बसे हुए है तथा उन्हें विश्व के उस सर्वाधिक धनी और समृद्ध अंचल के पूरे नागरिक अधिकार प्राप्त हैं। इनमें से कई तो वहीं के अच्छे व्यापारियों में गिने जाते हैं।

खेद है कि भारत में कहीं–कहीं इसके ठीक विपरीत देखने को मिलता है और वह भी अपने देशवासियों के लिए। कई एक प्रान्तों में वहीं बसे हुए अन्य प्रान्तों के लोगों के विरुद्ध, दूषित एवं भ्रांत धारणाएँ या भावनाएँ उत्पन्न की जा रही हैं। इसके लक्ष्य विशेषकर राजस्थानी हैं जिन्हें मारवाड़ी कहा जाता है।

यह सुनकर हमें दुख होता है कि राजस्थानियों के विरुद्ध एकाध प्रान्तों में, विशेषकर बंगाल में कहा जाता है कि वे हमारी धरती के नहीं हैं, बाहर के हैं।

मैं सोचने लगा कि क्या बंगाल और राजस्थान एक ही मातृभूमि भारत के अंगीभूत नहीं हैं क्या अगर प्रान्तीय सीमाओं को मानकर भी चलें तो भी वर्षो से राजस्थान से भिन्न प्रान्त में रहते आये मारवाड़ी उस प्रान्त एवं वहीं की धरती और निवासियों से अलग कैसे हुए। कई परिवारों की तो पीढ़ियाँ ही यहाँ जन्मीं और पनपी। इसी तरह बिहार, यू०पी० और उड़ीसा में भी हजारों बंगाली परिवार सैकड़ों वर्षो से रहते आ रहे हैं। मारवाड़ियों के विरुद्ध यह भी कहा जाता है कि वे केवल व्यापार में लगे रहते हैं, सामान्य जन–जीवन के विभिन्न पहलुओं से सम्बन्ध कम रखते है।

राजस्थानी स्वभावतः उद्यमी और साहसी होते हैं। अजीविका की खोज में वे जहाँ कहीं भी गये, वहाँ पनपे और सम्पन्न हुए। पर इस स्थिति में आने के लिए जो घोर परिश्रम करना पड़ा उसमें उन्हें इतना अवकाश नहीं मिल पाया कि वे स्थान विशेष के सामान्य जनजीवन में ज्यादा भाग ले सकें। अब नई पीढ़ी के राजस्थानी अवश्य घुलमिल रहे हैं और आज तो बंगाल में या पंजाब में रहने वाले मारवाड़ी युवकों को जल्दी पहचान पाना मुश्किल है।

बंगाल में राजस्थानियों के विरुद्ध वातावरण बनाने में कम्यूनिस्टों का बड़ा हाथ रहा है, क्योंकि व्यापारी समाज के होने के कारण राजस्थानी सदा से कांग्रेस का साथ देते रहे हैं। अधिकांश बंगाली–समाज इन विषैले नारों से प्रभावित नहीं है और इसका प्रत्यक्ष प्रमाण तो यह है कि बंगाल केबिनेट में दो मंत्री राजस्थानी हैं।

४०० वर्ष पहले मुगल बादशाह अकबर के समय में हमारे कुछ पूर्वज राजस्थान से दिल्ली और आगरा आकर बस गये थे। उनकी गणना वहाँ के प्रतिष्ठित व्यापारियों में होती थी। यहाँ तक कि उनकी आवभगत बादशाह के यहाँ भी थी। १७वीं सदी में बंगाल की हाकिमी जब मुर्शीदकुली खाँ को मिली तो वह अपने साथ आगरे से कुछ विश्वस्त राजस्थानियों को रसद और दुकानदारी के काम के लिए बंगाल ले आया, क्योंकि हिसाब–किताब, मेहनत और तोल–जोख में उनकी साख से नवाब बहुत प्रभावित था। इन्हीं राजस्थानियों ने बंगाल में अपने–अपने व्यवसाय को जमाया।

१८वीं सदी के बाद तो बंगाल के इतिहास की हर परत में जगत सेठों के घराने का वर्णन है। उनकी हुण्डी और बीमा की साख भारत में ही नहीं, विदेशों में भी थी। वे नवाब के अर्थ–मंत्री के सिवाय प्रमुख सलाहकार भी थें यहाँ तक कि ईस्ट इण्डिया कम्पनी को भी बहुत बार उनकी कृपा पर निर्भर रहना पड़ता था।

कई बार मराठे स्वर्णभूमि बंगाल की प्रसिद्धि सुनकर बड़ी–बड़ी फौजों के साथ वहाँ लूट–पाट के लिए आए। परन्तु जगत सेठों ने करोड़ों रुपए अपने पास से देकर उन्हें वापस कर दिया और गरीब जनता को उनके अत्याचारों से बचा लिया।

नवाब सिराजुद्दौला के समय जगत सेठ घराने में सेठ

अमींचन्द थे। ये शितचन्द और फतेहचन्द के बाद हुए। अमींचन्द को इतिहासकारों ने विश्वासघाती और देशद्रोही बताया है, क्योंकि उन्होंने ईस्ट इण्डिया कम्पनी और सिराजुद्दौला के संघर्ष में कम्पनी का साथ दिया था। परन्तु तथ्य तो यह है कि इसके पीछे देश–द्रोह या विश्वासघात की बात नहीं थी बल्कि उनके सामने नवाब ने ही ऐसी हालत पैदा कर दी थी कि कम्पनी का साथ देने के विसाय अन्य कोई चारा नहीं रह गया था।

नवाब अलीवर्दी खाँ के लाड़–प्यार से सिराजुद्दौला ऐयाश और जिद्दी हो गया था और नवाब के मरने के बाद कुछ चाटुकार उसके मुँह लगे हो गये जो जगत सेठ से ईर्ष्या और द्वेष रखते थे। सेठ अमींचन्द की एक विधवा अनुपम सुन्दरी पुत्री थी। सिराजुद्दौला ने एक दिन उनकी पुत्री के बारे में घृणित प्रस्ताव भेजा और न मानने पर ध मकी दी। सेठ अमींचन्द के सामने उस समय दो ही रासते रह गये थे या तो नवाब का प्रस्ताव मानकर अपनी रोती बिलखती पुत्री को उसके हरम में भेजकर उसका कृपा–पात्र बने रहना या फिर अपनी मान–मर्यादा बचाने के लिए ईस्ट इण्डिया कम्पनी की शरण लेना।

वे इन दिनों यह भी महसूस करने लगे थे कि नवाब की बढ़ती हुई भोग–लिप्सा के कारण किसी भी भले घर की युवती की इज्जत सुरक्षित नहीं है और उन्हें आये दिन इस प्रकार की शिकायतें सुनने को मिलती थीं, इसलिए उन्होंने ऐसे व्यक्ति के हाथ में देश का शासन रहने देना किसी भी हालत में सुरक्षित नहीं समझा। उस समय कम्पनी की शक्ति नवाब के सामने नगण्य थी, परन्तु सेठ अमींचन्द ने अपनी मान–मर्यादा और धन–सम्पत्ति की बड़ी जोखिम उठाकर भी कम्पनी का साथ दिया। फलस्वरूप पलासी के युद्ध में नवाब की करारी हार हुई। इसके बाद किसी ने नवाब की हत्या कर दी। परिस्थितियों से विवश होकर सेठ अमींचन्द को नवाब के विरुद्ध जाना पड़ा था, पर उसके मरने के बाद उन्होंने उसके परिवारवालों की हर प्रकार से सहायता की और देखभाल भी की।

१९वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में जगत–सेठों के सिवाय प्रवासी मारवाड़ियों की बहुत–सी फर्मे मुर्शिदाबाद, कलकत्ता और असम में स्थापित हो गयी थीं। इनका नियम था कि कोई भी राजस्थानी युवक कलकत्ते या असम में उपार्जन के लिए आकर उनकी गद्दी में ठहर और खा–पी सकता था। उसके साथ उनका व्यवहार इतना प्रेम और सौजन्य का होता था कि उसे इसमें संकोच का अनुभव नहीं होता था। इसके सिवाय कारोबार के लिए भी उसे इनके यहाँ से ५०० से १००० रुपये तक बिना ब्याज के उधार मिल जाते थे ताकि वह अपनी कपड़े या गल्ले की छोटी–सी दुकान कर ले, दूसरे व्यापारी और दुकानदार भी स्थापना (मुहूर्त) के समय कुछ–न कुछ रकम उसके यहाँ जमा करा देते थे। इस प्रकार मेहनत और ईमानदारी से कुछ वर्षो में उसका व्यवसाय जम जाता था। अब भी असम के प्रत्येक बड़े शहर में एक 'बड़ा बासा' (सबसे पहले स्थापित फर्म) होता है, जहाँ बाहर से आये हुए लोग निस्संकोच ठहरते और भोजन करते हैं, यद्यपि अब यह प्रथा शिथिल होती जा रही है।

इस प्रकार मेहनत और मेलजोल से रराजस्थानियों ने अपने पाँव सुदूर प्रान्तों में जमाये तथा वाणिज्य व्यवसाय और उद्योग की दृष्टि से उन स्थानों को उन्नत किया एवं खुद भी सम्पन्न हुए। उद्योग व्यापार के सिवाय मारवाड़ियों ने कभी सरकारी नौकरी, वकालत या डॉक्टरी की तरफ ध्यान ही नहीं दिया।

२०वीं शताब्दी में प्रथम महायुद्ध के बाद मारवाड़ी आयात–निर्यात करने लगे तथा उद्योग–धंधे स्थापित करन लगे। प्रान्तों की राजनीतिक व सामाजिक गतिविधि में भी भाग लेने लगे। बंगाल में नमक–सत्याग्रह और विलायती कपड़ों की दुकानों पर धरने के सिलसिले में न केवल मारवाड़ी पुरुष बल्कि महिलाएँ भी जेल गयीं। जिस प्रान्त में कमाते और रहते आये, उस प्रान्त के धार्मिक कार्यो में मारवाड़ी मुक्तहस्त से खर्च करते रहे हैं। असम, बंगाल और बिहार के प्रत्येक शहर तथा कस्बे में इनके द्वारा संचालित स्कूलें, पुस्तकालय, धर्मशालाएं और अस्पताल एक नहीं, अनेक देखने को मिलेंगे।

स्वराज्य–प्राप्ति के बाद भारत छोड़कर जाते समय अंग्रेजों से, उनका अधिकांश व्यापार–उद्योग एवं कारबार राजस्थानियों के हाथों में आया और उन्होंने इसे न केवल नष्ट होने से बचाया बल्कि और भी बढ़ाया। आज तो भारत के औद्योगिक प्रान्तों में इनका प्रमुख स्थान हे। भारत के विभिन्न भागों में राजस्थानियों का कम–बेसी यही इतिहास है।

विकास के इस दौर में राजस्थानी स्थानीय जन–जीवन

और सामाजिक मेल–मिलाप में कम हिस्सा ले पाये। इसे हम त्रुटि या कमजोरी मान सकते हैं। यद्यपि बंगाल में राजस्थानियों का इतिहास लम्बा है, पर वे बंगला भाषा और साहित्य का अध्ययन नहीं कर सके तथा खान–पान की विभिन्नता के कारण न आपस में शादी–विवाह कही सकर सके। पर केवल इतने के लिए मारवाड़ी समाज के अन्य अवदानों को भुला देना न्याय–संगत नहीं है, विशेषकर आज की परिस्थितियों में जब राष्ट्र को भावात्मक एकता की बहुत आवश्यकता है।

पिछले दिनों बंगाल के एक प्रमुख दैनिक पत्र में एक लेख छपा था जिसका भावार्थ यह था कि मारवाड़ियों ने यहाँ के प्राय: सभी उद्योग धंधे अपने कब्जे में ले लिए हैं और उनमें ज्यादातर कर्मचारी और अफसर अन्य प्रान्तों के रखते हैं। इस सम्बन्ध में हमें कहना है कि जहाँ तक उद्योग–धंधों का सवाल है, वह जबरन तो लिए नहीं जा सकते आपस के समझौते और बातचीत से खरीदे–बेचे जाते हैं, इसके लिए न केवल पूंजी बल्कि रुचि, परिश्रम और साहस की जरूरत होती है। कर्मचारी वर्ग तो शायद आफिसों में उसी प्रान्त के ही अधिकतर हैं। मजदूर जरूर उत्तर प्रदेश, उड़ीसा और बिहार के होते हैं, क्योंकि उनका काम कड़ी मेहनत माँगता है।

हम प्रतिष्ठित व प्रभावशाली समाचार–पत्रों और पत्रिकाओं से निवेदन करेंगे कि यदि ऐसे आक्षेपों का प्रचार होता है तो उसकी प्रतिक्रिया अन्य प्रान्तों में भी जरूर होगी जो देश के संगठन के लिए बहुत ही अवांछनीय है।

कुछ लोगों के गलत प्रचार से यह भ्रान्तिपूर्ण भावना हो जाती है कि मारवाड़ी समाज का उद्देश्य येन–केन–प्रकारेण केवल पैसा कमाना है और देश के विकास तथा स्वतंत्रता में उनका कोई योगदान नहीं रहा है, परन्तु आज तक के भारतीय इतिहास के पृष्ठों पर नजर डालने से यह स्पष्ट हो जाता है कि ऐसे प्रचारों में द्वेष की भावना ही अधिक है। राजस्थान के सपूतों ने राष्ट्र की एकता और अखण्डता की रक्षा के लिए सदियों तक संघर्ष किया है। धन और जन की अपार–क्षति उठाकर भी वे प्राणों की आहुति देने में न हिचके। राणा सांगा और प्रताप का शौर्य इस बात का साक्षी है! वीर दुर्गादास राठौड़ का त्याग और मीरां की भक्ति को किसी प्रकार भी भुलाया नहीं जा सकता। अगर हम आज के युग को भी देखें तो राष्ट्र के कल्याण और स्वाधीनता के लिए हजारों की संख्या में राजस्थानी युवक और युवतियों के जेल जाने और कठिन यातनाओं को सहने के उदाहरण एक नहीं अनेक मिलेंगे।

एक दिन मैं एस्प्लेनेड के मैदान से गुजर रहा था। कुछ उच्छृंखल युवकों ने मेरी ओर ताना कसा–''यह मारवाड़ी है।'' मुझे बुरा नहीं लगा और मैंने गर्व के साथ कहा–''जी, मैं मारवाड़ी हूँ!''◆

'गंगा' को संगीतमय श्रद्धा निवेदित

कोलकाता। 'पैट्टन' अपनी विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से हमेशा सामाजिक दायित्व का निर्वाह करते आया है। तदनुरूप बाल दिवस पर पैट्टन के सहयोग से प्रिंसेप घाट में एक संभीतमय कार्यक्रम ''संगम'' का आयोजन किया गया। जिसमें अंजीका, इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ सेलेब्रल पालसी, अक्षर, मेन्टेड तथा मनोविकास केन्द्र के छात्रों ने भाग लेकर पतित पावन गंगा को श्रद्धा निवेदित की। इस मौके पर पैट्टन के चेयरमैन हरिप्रसाद बुधिया, प्रबंध निदेशक श्री संजय बुधिया उपस्थित थे। इस मौके पर उपस्थित पश्चिम बंगाल के राज्यपाल श्री एम.के. नारायण ने बच्चों का उत्साहवर्द्धन किया।◆

महादानव भ्रष्टाचार

– ओम लडिया

श्री हरि विष्णु का दरबार। सभी देवता विराजमान थे। कलियुग पर गंभीर मंत्रणा चल रही थी। अपने–अपने समय के सभी प्रमुख राक्षस हिरण्याक्ष, हिरणकश्यप, रावण, कुम्भकरण, दन्तवक्र, शिशुपाल, कंस व अन्य राक्षसगण श्री विष्णु से प्रार्थना कर रहे थे–हे दयानिधान! श्रापग्रस्त होकर हम सभी ने सत्युग, त्रेता और द्वापर में राक्षस रुप में घनघोर पाप, अत्यचार किये। स्वेच्छाचारी होकर भोग और लिप्सा में लिप्त रहे। ऋषि मुनियों पर पाशविक अत्याचार किये। यहाँ तक कि स्वयं आपको विवश होकर अवतार लेना पड़ा और हमारी मुक्ति हुई।

हे सर्वशक्तिमान! एक दीर्घ समय तक उन्मुक्त भोगवादी प्रवृत्ति और स्वेच्छाचारी जीवन जीते–जीते हम लोगों के मनमस्तिष्क विकारग्रस्त हो गये हैं। हमारा स्वभाव भी वैसा ही हो गया है। एक प्रकार से बेकार होकर हम सब शक्तिहीन हो गये हैं, आप तो सबके पालक हैं। हमारी रक्षा करें, हमें मार्गदर्शन दें।

राक्षसों की प्रार्थना सुनकर श्री विष्णु ने द्रवित होकर कहा– कलिकाल में आप सबका ही सर्वत्र साम्राज्य रहेगा। अप्रत्यक्ष रूप से समूची पृथ्वी पर आप का ही वर्चस्व होगा। आपकी राक्षसी और तामसी वृत्तियों के प्रभाव से संसार सभी प्रकार की बुराइयों की लीलास्थली बन जाएगा, मनुष्य सभी प्रकार की कुवृत्तियों, बुराइयों का जीता जागता पुंज लगेगा। काम, क्रोध, लोभ, मोह के पाश में जकड़ा कलियुग का मनुष्य आपके अधीन होगा। सर्वत्र आप सबकी ही जय जयकार होगी और आप भ्रष्टाचार के नाम से कलिकाल में महिमामंडित होंगे। आपकी सम्मिलित शक्तियों के प्रभाव से कलियुगी समाज त्राहि–त्राहि कर उठेगा और भ्रष्टाचार के महादानव के रूप में यत्र–तत्र–सर्वत्र आपकी ही उपस्थिति होगी।

इतने में ही कॉल बेल की आवाज से नींद में विघ्न पड़ा और स्वप्न भंग हुआ। अनमयस्क भाव से उठकर दरवाजा खोला, सामने दूध का पैकेट लिए दूधवाला हाजिर था। सपने के बारे में सोच ही रहा था कि बिल्ली ने म्याऊँ–म्याऊँ की आवाज से अपने खाली पेट की ओर ध्यान दिलाया। पैकेट का दूध बर्तन में उड़ेल कर उसकी ओर बढ़ा दिया। लेकिन यह क्या? दूध तक मुँह ले जाकर वह अपना मुँह घुमा लेती थी। माथा ठनका। सोचा जानवरों की घ्राण शक्ति मनुष्य की अपेक्षा तेज होती है। हो सकता है दूध में कुछ गड़बड़ हो। यह सोच कर वह दूध लेकर पास के थाने में गया और रिपोर्ट दर्ज करा दी। कुछ दिनों बाद छानबीन की तो पता चला कि वह दूध कृत्रिम था जो साबुन और तेल का मंथन कर बनाया गया था जिसे किसी दूध डेयरी के माध्यम से बाजार में बेचा जा रहा था। वाह रे भगवान! रात में स्वप्न और भोर होते ही (प्रत्यक्ष) परचा।

दूध जैसी चीज में इस तरह का घपला। इस प्रकरण ने मनमस्तिष्क को झकझोर दिया। अचानक दिमाग में देखे गए स्वप्न की बातें गूंजने लगी। भ्रष्टाचार के रूप में आसुरी शक्तियों के भिन्न–भिन्न रूप सामने आने लगे। भ्रष्टाचार का ही एक रूप मिलावट और नकली सामानों के रूप में हर जगह मौजूद है। सब्जी पर रंग, रसायनों के जरिये पकाये गये फल, खाद्यान्न पदार्थों और मसालों में हानिकारक मिलावट, नकली तेल व बेबी फूड, सौन्दर्य प्रसाधन सामग्री, सब कुछ नकली और मिलावटी। मन वितृष्णा से भर उठा। कैसा जीवन जी रहे हैं हम?

वाह रे कलिकाल! जहाँ देखिये वहाँ मौजूद है भ्रष्टाचार का राक्षस, कुछ भी इसकी प्रभाव सीमा से बाहर नहीं। शिक्षा, स्वास्थ्य, खेलकूद, आजीविका के साधन, धर्म, राजनीति, न्याय हर जगह भ्रष्टाचार का बोलबाला है। सार्वजनिक जीवन का शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र हो जो भ्रष्टाचार रूपी असुरों से वंचित हो।

भ्रष्टाचार यानी भ्रष्ट आचार। विचार किये जाने पर लगता है जैसे हमारा समाज व देश इसका आदी हो गया है। भ्रष्टाचार का कीड़ा दीमक की तरह, (विवशता वश) हमारी दिनचर्या का एक अभिन्न अंग बन चुका है जिसने सादगी, मित्तव्ययता, स्वावलम्बन, ईमानदारी जैसे शब्दों को अर्थहीन कर दिया है। समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार के निम्नलिखित कारण हो सकते हैं।

१) लालच, २) अंधविश्वास, ३) बेरोजगारी, ४) शिक्षा–व्यवस्था, ५) चिकित्सा व्यवस्था, ६) कर–मुक्त कृषि आय, ७) सरकारी खरीद बिक्री व्यवस्था, ८) नौकरशाही, ९) राजनेता, १०) तस्करी, ११) आतंकवादी, १२) चुनाव प्रणाली, १३) सुविधावादी प्रवृत्ति, १४) सरकारी विभागों में दलालों का बोलबाला, १५) सरकारी कार्यालयों में पदोन्नति तबादले, १६) नकली दवाइयाँ और खाद्य–पदार्थों में मिलावट, १७) जन वितरण प्रणाली, १८) बहुस्तरीय कर प्रणाली एवं उच्चस्तरीय कर प्रतिशत, १९) पुलिस विभाग तथा कानून व्यवस्था, २०) बिना मेहनत के आसान आमदनी के साधन।

ये तो संक्षेप में कुछ शीर्षक हैं। यदि इनका पूरा विवरण लिखा जाए तो एक विशाल भ्रष्टाचार ग्रंथ बन जायेगा जो यकीनन अन्य ग्रन्थों पर भारी पड़ेगा। लोभ–लालच, नैतिकता विहीन भोगवादी संस्कृति में जकड़ा आज का मनुष्य, भौतिक सुख–संसाधनों को प्राप्त करने की अंधी दौड़ में सब कुछ भुला बैठा है। लगता है मानवीयता जैसे शब्द से आज के मानव का कोई संबंध ही नहीं है।◆

कैरियर श्रेष्ठ या मातृत्व का उत्तरदायित्व

- भँवरलाल गट्टानी

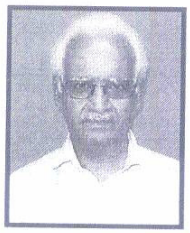

कैरियर और मातृत्व का उत्तरदायित्व दोनों के अलग–अलग रास्ते हैं। कैरियर नारी का अपना चुना हुआ मार्ग है, जबकि मातृत्व प्रकृति प्रदत्त है। मातृत्व, नारी को प्रकृति या ईश्वर का दिया हुआ एक वरदान है और इस वरदान का उत्तरदायित्व निभाना नारी का प्रथम कर्तव्य है। इसलिए कैरियर की अपेक्षा निश्चित रूप से मातृत्व का वरदान ही श्रेष्ठ है।

नारी शरीर की संरचना प्रकृति ने इसलिए की कि जिससे सृष्टि के निर्माण का कार्य निरन्तर बिना किसी बाधा के चलता रहे, कभी रूके नहीं।

मगर आज पैसों की प्रतिस्पर्धा के इस युग में नारी कैरियर की तरफ दौड़ रही है। स्कूल–कॉलेज के दिनों में ही लड़कियां यह तय कर लेती है कि मुझे ड।ै करना है या फिर ल्दहपदममत बननता है या डठ। में ज्वच करना है या फिर प्ै ऑफिसर बनना है और इसिलए बड़ी लगन के साथ पढ़ाई करके परीक्षा में ९०–९५ प्रतिशत अंक ले कर पास होती है और कॉलेजों से निकल कर अपना कैरियर बनाने के लिए नौकरियों में चली जाती है, ऑफिस ज्वाइन कर लेती हैं। आज हालत यह है कि कैरियर के चक्कर में मातृत्व चौपट होता जा रहा है। कैरियर बनाते–बनाते तीस पैतीस की उम्र निकल जाती है। शादी करने का उन्हें ख्याल ही नहीं आता। स्वास्थ्य विज्ञान के अनुसार ३५ वर्ष की उम्र के बाद नारी के लिए माँ बनना खतरनाक साबित हो सकता है। इसीलिए सरकार ने शादी की उम्र १८ वर्ष रखी है। लड़कियों को १८ से २५ वर्ष की उम्र तक शादी कर लेनी चाहिए और अपनी गृहस्थी बसा लेनी चाहिए।

प्रकृति का हर काम समय सीमा में बन्धा हुआ है। सूरज रोज सबेरे अपने समयानुसार उदय होता है। सूरज को सुबह की जगह दोपहर में उदय होता किसी ने देखा है? पेड़–पौधे, पशु–पक्षी सब प्रकृति के नियमों में बन्धे हुए हैं। केवल मनुष्य ही प्रकृति के साथ छेड़–छाड़ करता रहता है। और इसका परिणाम सुखद ही हो कोई निश्चित रूप से नहीं कह सकता।

ज्यादातर लड़कियां आज नौकरी या जॉब करने को ही अना कैरियर समझती है, शादी करके माँ भी बन जाती है। मगर माँ के दायित्व का पालन करना नौकरी करते हुए सम्भव नहीं होता। पति–पत्नी दोनों नौकरी पर चले जाते है, तो पीछे बचों को नौकरानियां ही सम्भालती है या फिर शहरों में क्रेच का चलन है, जहाँ पर बचों को छोड़ दिया जाता हैं। जो बच्चें इसी तरीके से पल बढ़ कर बड़े होते हैं, वे माँ के प्यार से वंचित रह जाते है उन्हें आगे चलकर जीवन की सही मंजिल नहीं मिल पाती या फिर मंजिल तलाशने में काफी पेरशानियां उठानी पड़ती है। यही हकीकत हैं। यह परिणाम है उन बच्चों का जिनकी मातायें मातृत्व का उत्तरदायित्व नहीं निभाती।

माँ बच्चों की पहली गुरू होती है, जो ऊँगली पकड़कर बच्चों को चलना सीखाती है, स्नेह से ममता से गोदी में लेकर बोलना सीखाती है और बच्चा जग माँ कहकर उसे बुलाता है तो वह उस पर न्यौछावर हो जाती है। उसके दिलों–दिमाग में कितनी खुशी का अनुभव होता है शब्दों में बया नहीं हो सकता। नारी के लिए मातृत्व का सुख दुनिया में सबसे बड़ा सुख होता है और ये सुख कैरियर में नहीं ढूंढा जा सकता।

अपने कैरियर में नारी पैसा या नाम कमा सकती है। मगर जो सुख मातृत्व में है, वह उसे न तो पैसों से मिल सकता है और न ही नाम से। उसे अपने कैरियर के बारे में न सोचकर, बच्चों का लालन–पालन सही ढंग से करके उन्हें चरित्रवान बनाना चाहिए ताकि बड़े होकर स्वामी विवेकानन्द या नेताजी सुभाष या लाल बहादुर शास्त्री या फिर झाँसी की रानी बन कर दुनियां में अपना नाम कमाये और अपने माता–पिता का नाम रौशन करें और आसमान बुलन्दियों को छू ले।

''कौन कहता है आसमां में छेद हो नहीं सकता,
एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारो।।''

कैरियर के चक्कर में मातृत्व सुख से वंचित रहना या उसके उत्तरदायित्व का न निभाना मेरी राय में बिलकुल उचित नहीं है। अक्सर ऐस भी होता है कि नारी अपने कैरियर बनाने की होड़ मे अपने आचरण, संस्कृति और शिष्टाचार सभी को कुचलकर दिशाहीन हो जाती है एवं समस्त नारी जाती का अपमान करती है। कुछ नारियां तो अपने कैरियर को ही सर्वोपरि मान कर माँ बनना ही नहीं चाहती। यदि माँ बनने की स्थिति आ भी जाती है तो गर्भस्थ शिशु को जन्म देने के पहले ही खत्म कर देती है। इस तरह की मानसिकता वाली नारी अगर कैरियर की ऊँचाइयों को छू भी लेती है तो भी एक सफल भारतीय नारी नहीं कही जा सकती।

इसीलिए हमें जान लेना चाहिये कि जीवन में कैरियर की अपेक्षा मातृत्व का उत्तरदायित्व निभाना ही सर्वश्रेष्ठ है। अगर गहराई से देखा जाये और समझा जाये तो मातृत्व का उत्तरदायित्व सफलता के साथ निभाना ही जीवन का सबसे बड़ा कैरियर है। इससे ऊँचा कोई दूसरा कैरियर हो ही नहीं सकता।

– 189/1/1, बाँगुड़ एवेन्यू
ब्लॉक–बी, कोलकाता–55, मो.–9830198780

हास्य के रंग, कवियों के संग

"ओसामा को ना ढूंढ सका, फिर तू काहे का दादा है"

श्री अग्रवाल समाज (मद्रास) का कवि सम्मेलन

"तू दुनिया का बनता है दादा, एक ओसामा को तो ना ढूंढ सका, तो फिर काहे का दादा है.....," "सन् ४७ में आजाद हुए थे, आज ए के ४७ से ही बर्बाद हो रहे हैं....." "तुम (अमरीका–पाकिस्तान) दोनों बराबर के आतंकवादी हो, जैसा बोओगे, वैसा ही काटोगे.....।" कोटा (राजस्थान) के जगदीश सोलंकी के इस प्रकार की वीररस से भरपूर काव्यों की बही सरिता में श्रोताओं की ऐसी भुजाएं फड़की कि मानो देश के किसी बॉर्डर पर 'दुश्मन' सामने देख सैनिकों की भुजाएं फड़कती है।

शनिवार को श्री अग्रवाल समाज (मद्रास) की ओर से ब्राडवे स्थित राजा अन्नामालै मांड्रम में देर रात्रि तक चले "हास्य के रंग, कवियों के संग" कवि सम्मेलन में जहां हास्य काव्य के दौरान श्रोता हंसते हुए लोटपोट हो गए। वहीं ख्यातनाम कवि व हास्य की फलझड़ी माणिक्य वर्मा (भोपाल) के 'व्यंग्यों के बाणों ने' श्रोताओं के दिलों को अन्दर तक कुरेदा।

'धोनी' ने की ओपनिंग : "मोल भाव ना हो, ऐसा हिन्दुस्तान दे मां शारदे.....," सरस्वती वंदना से शुरू हुए कवि सम्मेलन की **'ओपनिंग'** में जानी वैरागी (धार) ने काव्यों के तीखे बाणों से अमरीका पर खूब वार किए। उन्होंने पूर्व अमरीकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन के रोमांस किस्सों को काव्य के माध्यम से खूब कुरेदा। उन्होंने हनुमान जी को भारत का सर्वश्रेष्ठ **'मैंनेजमैंट गुरु'** के रूप में बखान किया। इसके अलावा उन्होंने मां के आंचल के महत्व पर एक कविता "शायद यह सृष्टि इसलिए हरी भरी रही होगी, मां के आंचल से दूध नहीं बरसा होगा, मां के आंचल से दूध नहीं बरसा होगा, मां की गोद में खेलने के लिए भगवान भी तरसा होगा" को श्रोताओं ने खूब सराहा।

इसी प्रकार हास्य कवि सुनील जोगी (दिल्ली) ने भी श्रोताओं को खूब गुदगुदाया। उन्होंने "बिना पढ़े लिखे शिक्षा मंत्री बन जाते हैं, बिना बी.ए. नेता पीए रखते हैं, फिर कैसे ये फाइल निपटाते हैं, पहले ये अंगूठा चूसते थे, अब अंगूठा दिखाते हैं.....," "अटल बिहारी पी.एम. बनकर नहीं बन सके बाप, लेकिन अम्मा बन गई एक कुंवारी....," "सजा हुई फांसी अफजल को, इसकी फाइल निपटा दो, भारत मां है दुखियारी....अब तो इसे निपट दो.....।" उन्होंने कई व्यंग्यात्मक काव्य बाणों के माध्यम से बेटियों की उपेक्षा, कुर्सी व लालू पर भी खूब श्रोताओं की वाहवाही लूटी। कवियत्री डॉ. अन्नू सपन (भोपाल) की शेर–शायरियों पर काफी देर तक पण्डाल तालियों से गूंजता ही रहा। उन्होंने "जिन्दा रहना है तो जिन्दगी से लड़ो, आसमां से नहीं रोटियां आएंगी, जब भी सावन की रंगलियां आएंगी.....," "इस तरह से मुझे ना देखिए, मेरी हर सांस है एक उपन्यास, कोई अखबार की कतरन नहीं हूं जो....." "देवियों की तरह जिनका पूजा गया या सभाओं में जिनको नचाया गया, एक औरत को औरत नहीं समझा गया.....।" उनकी रचनाओं को महिला श्रोताओं ने खूब सराहा। कोटा (राजस्थान) के जगदीश सोलंकी ने बीररस से पण्डाल को 'भिगो' दिया। उन्होंने अमरीका पर खूब कटाक्ष किया। "क्या सारी दुनियां की जन्म कुण्डली तेरे पास है, लेकिन ओसामा कहां है इसका पता तक तू नहीं लगा सका....," "जलाने वालों को पहचानता है तिरंगा, लड़ाने वालों को पहचानता है तिरंगा.....।" वीररस पर श्रोता खूब मंत्रमुग्ध हुए। देश के ख्यातनाम कवि व व्यंग्यकार माणिक्य वर्मा (भोपाल) ने "मन जैसे हीरों को मिट्टी के व्यापारी लूट ले गए, पत्थर का ताजमहल तो याद रहा, शीशों के रिश्ते टूट गए.....।" उन्होंने बाबा रामदेव व अभिनेत्री मल्लिका शेरावत के परिधानों पर श्रोताओं को व्यंग्य के माध्यम में खूब हंसाया। वहीं नेताओं, समाचार–पत्रों में प्रकाशित खबरों की हैडलाइनों को मिलाकर पढ़ने से बनने वाली नई खबरों पर भी श्रोताओं को गुदगुदाया। संचालक अशोक भाटी (इन्दौर) ने भी श्रोताओं की वाहवाही बटोरी।◆

सम्मेलन के नये आजीवन सदस्यों का स्वागत

नाम : **संदीप अग्रवाल**
कार्यालय का पता :
ब्लॉक–ओ, फ्लैट न.–१४
२६७, प्रींस अनवर शाह रोड
कोलकाता–७०००३३
मोबाईल नं.– ०९८३१७९१७९३

नाम : **रवि कुमार गनेरीवाल**
कार्यालय का पता :
१५, बालीगंज पार्क रोड
२बी, चित्रलेखा
कोलकाता–७०००१९
मोबाईल नं.– ०९४३३५६८३१९

नाम : **बाबूलाल बरड़िया**
कार्यालय का पता :
१०८/१, एन.के. बनर्जी स्ट्रीट
रिसड़ा, हुगली
मोबाईल नं.– ०९८३६९२४३७१

नाम : **मोनाली बोथरा**
कार्यालय का पता :
२, काली कृष्ण टैगोर स्ट्रीट
पांचवां तल्ला
कोलकाता–७००००७
मोबाईल नं.– ०९१६३४३९५००

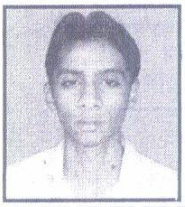

नाम : **सौरभ अग्रवाल**
कार्यालय का पता :
१२, मधु राय बाई लेन
ग्राउण्ड फ्लोर
कोलकाता–७०० ००६
मोबाईल नं.– ०९००७६८३०५२

नाम : **नवल किशोर केडिया**
निवास का पता :
२८/१, सपन निकेतन
बकुलतल्ला, कोलकाता–७०००६१
मोबाईल नं.– ०९००७०१००१८

नाम : **सिद्धार्थ कुमार चौधरी**
कार्यालय का पता :
शक्ति अपार्टमेंट
१९बी, बिनोवा भावे रोड, प्रथम तल्ला
तारातल्ला के पास, कोल–३८
मोबाईल नं.– ०९८३१७०३६००

नाम : **महेश कुमार नागवान**
कार्यालय का पता :
फ्लैट न.–एस/३, पी४०
ब्लाक–बी, बांगुड़ एवेन्यु
कोलकाता–७०००५५
मोबाईल नं.– ०९८३०७५७५८९

नाम : **सतीश सहवाल**
कार्यालय का पता :
२२, के.के. भट्टाचार्य बाई लेन
आकाश गंगा, फ्लैट न.–२०१सी
हावड़ा–७१११०१
मोबाईल नं.– ०९००७०१००१६

नाम : **शैलेश जैन**
कार्यालय का पता :
श्री वर्षा अपार्टमेंट
४९/१, डबसन रोड, छः तल्ला
रूम न.–६१बी, हावड़ा–७१११०१
मोबाईल नं.– ०९८३०३८९५१०

नाम : **महेश गुप्ता**
कार्यालय का पता :
२८/१, सपन निकेतन
बकुलतल्ला
कोलकाता–७०००६१
मोबाईल नं.– ०९८७४२२७३८३

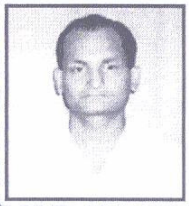

नाम : **बीपिन सिकरिया**
निवास का पता :
१९बी, अलीपुर रोड
सुभम अपार्टमेंट
कोलकाता–७०००२७
मोबाईल नं.– ०९८३६९७७७६९

मारवाड़ी समाज गरीबों की मदद करने के लिए हमेशा आगे-गोपीनाथ मुंडे

अ.भा.मा.सम्मेलन द्वारा आयोजित कार्यक्रम में अपना मनोगत व्यक्त करते हुए भाजपा के नेता गोपीनाथजी मुंडे, ललित गांधी, सांसद पियुष गोयल, महाराष्ट्र विपक्षी दल के नेता एकनाथ खडसे, पूर्वमंत्री राज.के. पुरोहित, विधायक चंद्रकान्तदादा पाटील आदि

कोल्हापुर। मारवाड़ी समाज की सामाजिक भावना जागृत है। इसलिए मारवाडी समाज गरीबों की मदद करने के लिए हमेशा आगे है। महाराष्ट्र में रहकर पूरी तरह महाराष्ट्रीयन हो के अन्य समाज के साथ वो अच्छी तरह एकसंघ हो गया है। यह विचार भाजपा संसदीय उपनेता, सांसद गोपीनाथ मुंडे ने व्यक्त किया।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा आयोजित कार्यक्रम में मारवाडी समाज की उल्लेखनीय कार्य करने वाली सामाजिक संस्था, युवा उद्यमी और प्रतिभावान छात्रों का सत्कार समारोह में वे बोल रहे थे।

भारत के साथ–साथ विदेशों में भी मारवाड़ी समाज ने व्यापार, व्यवसाय और उद्योगधंधों में अपना प्रभाव जमाया है, उद्योग धंधों के अलावा सामाजिक कार्यों में भी इस समाज ने अग्रणी रहकर देश के विकास में अहम योगदान दिया है। मारवाड़ी समाज जहां रहता है, वहाँ की संस्कृति अपना लेता है। उद्योग–धंधों के साथ–साथ शैक्षणिक क्षेत्र में भी प्रगति की है। मारवाड़ी समाज अपने सामाजिक उपक्रमों से आम लोगों की मदद करता है। भाजपा की सफलता में भी मारवाड़ी समाज का बड़ा योगदान है। यह विचार विधानसभा में विपक्षी दल के नेता एकनाथ खडसे ने व्यक्त किए।

सांसद दिलीप गांधी ने कहा कि मारवाड़ी समाज के सामाजिक सेवा के जरिए आम लोगों तक पहुँचने से इसकी अलग पहचान बनी है। सांसद पीयुष गोयल ने कहा कि देश के विकास के साथ–साथ अपने समाज के विकास के लिए कोशिश करनी चाहिए। विधायक चैनसुख संचेती ने कहा कि मां का प्रेम, पिता की सलाह और भाई की चिंता कभी न भूलें। पूर्व मंत्री राज के पुरोहित और शामाजी गांधी ने भी विचार रखे। प्रस्तावना में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के मंत्री ललित गांधी ने कहा कि ''जहाँ न जाय गाड़ी, वहाँ जाय मारवाड़ी।'' पूरे देश में फैले हुए मारवाड़ी समाज का व्यापार और व्यवसाय में ६५ फीसदी हिस्सेदारी है। व्यापार व्यवसाय में आगे इस समाज के शिक्षा में पिछड़ेपन को देखते हुए इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया है।

समारोह में ९० गरीब छात्रों को स्कूली गणवेश बांटे गए। मारवाड़ी समाज के १६० मेधावी छात्रों का सत्कार और ११ छात्रों में छात्रवृत्तियां बांटी गई। समारोह में अतिथियों को समाज की ओर से राजस्थानी पगड़ी पहनकर उनका सत्कार किया गया।

समारोह में सांसद एटी नाना पाटील, सांसद हरीभाऊ जावळे, विधायक सुरेश हाळवणकर, विधायक चंद्रकांतदादा पाटील, भाजपा राष्ट्रीय कार्यकारिणी के महामंत्री शाम जाजू, जेष्ठ उद्योजक अमीचंद राठोड, लक्ष्मीपूरी मंदीर ट्रस्ट के अध्यक्ष सोनमल गांधी, महावीर नगर ट्रस्ट के अध्यक्ष लिलाचंद ओसवाल, गुजरी मंदीर ट्रस्ट के उपाध्यक्ष हिराचंद ओसवाल, लक्ष्मीनारायण मंदीर ट्रस्ट के अध्यक्ष हरीश जैन, आशापूरण मंदीर ट्रस्ट के उपाध्यक्ष बाबूलाल ओसवाल, मनोज राठोड़, प्रदीन जैन, कमलेश ओसवाल, प्रेमचंद जैन, इंदर चोधरी, किरण भंडारी आदि समेत मारवाड़ी समाज के विभिन्न पदाधिकरी उपस्थित थे।◆

शांति निकेतन में हिन्दी भवन की स्थापना में मारवाड़ियों का योगदान

– रमेश पसारी, बीकाखात (असम)

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कल्पना की साकार प्रतिमूर्ति शांति निकेतन में हिन्दी भवन की स्थापना का इतिहास इस बात के प्रत्यक्ष प्रमाण उपलब्ध कराता है कि यद्यपि हिन्दी भवन की योजना हिन्दी के प्रसिद्ध पत्रकार और साहित्यकार स्वर्गीय बनारसीदास चतुर्वेदी के दिमाग की उपज थी, परन्तु उनकी इस महत्वाकांक्षी योजना को कार्यरुप में परिणत करने का माध्यम बनने का सौभाग्य कलकत्ता के कतिपय मारवाड़ी बन्धुओं को प्राप्त है।

शांतिनिकेतन में हिन्दी भवन की स्थापना का इतिहास इस बात का गवाह है कि अगर उस समय भागीरथ जी कानोड़िया तथा अन्य दानवीर मारवाड़ी सज्जनों का सहयोग प्राप्त नहीं होता तो शायद ही पंडित बनारसीदास चतुर्वेती की यह कल्पना मूर्तिमान हो पाती। परन्तु श्री चतुर्वेदी जी के अनुसार विश्वभारती के वर्तमान संचालकों को हिन्दी भवन की स्थापना के इतिहास का पता भी नहीं। कभी जानने की जरुरत भी उन्होंने नहीं समझी।

शांति निकेतन में हिन्दी भवन की स्थापना की योजना के बारे में बताते हुए पण्डित बनारसीदास चतुर्वेदी ने लिखा है वर्षा ऋतु के बाद शांति निकेतन में सूर्यास्त बड़ा मनोहर होता है। एक दिन संध्या समय में बन्धुवर हजारीप्रसादजी द्विवेदी के साथ रेड रोड (सुरम पड़ी हुई लाल सड़क) पर टहलने गया हुआ था। द्विवेदीजी बड़े अच्छे संभाषणकर्त्ता है। उनके साथ बातचीत करने में सदैव आनन्द आता है। रास्ते भर हमलोग खूब हँसते रहे। जब हम दोनों पंथ निवास पर लौटे तो मैंने मजाक ही मजाक में कहा–यहाँ हिन्दी भवन बनेगा और आश्चर्य की बात यह है कि तीन वर्ष के भीतर ही शांतिनिकेतन में बत्तीस हजार की लागत का भवन बनकर तैयार हो गया, जिसकी नींव दीनबन्धु एण्ड्रयूज ने रखी थी और जिसका उद्घाटन पंडित जवाहरलालजी ने किया था।

इसी प्रकार शांति निकेतन में हिन्दी भवन के श्री गणेश की कथा भी आश्चर्यजनक है। श्री सीतारामजी सेकसरिया के अनुरोध पर पंडित चतुर्वेदी जी मारवाड़ी बालिका विद्यालय के पुस्तकालय के उद्घाटन के लिये पहुँचे और अपने संबोधन में उपस्थित छात्राओं से कहा–यहाँ से ९९ मील दूरी पर विश्व के महान कवि रहते हैं और आपने उनके दर्शन भी नहीं किये, यह कैसे आश्चर्य की बात है। सेकसरिया जी के अनुरोध पर चतुर्वेदी जी को ही लड़कियों के साथ उन्हें गुरुदेव के दर्शन कराने बोलपुर जाना पड़ा। साथ में सेकसरिया जी भी गये।

गुरुदेव चाहते थे कि वे सेकसरिया जी से छात्राओं के बोर्डिंग हाउस में एक नवीन कक्ष का निर्माण कराने को कहें। परन्तु जब पण्डित चतुर्वेदी ने कहा कि वे हिन्दी भवन के लिये क्षेत्र तैयार कर रहे है तो गुरुदेव मान गये। मारवाड़ी बालिका विद्यालय की छात्राओं के समक्ष उस समय गुरुदेव ने जो भाषण दिया, वह अत्यन्त ही मार्मिक था–गुरुदेव ने कहा–हम पुरुष लोग आपस में खूब लड़ते–झगड़ते हैं। यह काम स्त्रियों का ही है कि वे आपस में मेलजोल कायम करें। बड़ी होने पर आप हिन्दी भाषा–भाषियों और बंगालियों में एकता कायम कर सकती है। मैंने जो शांति–निकेतन कायम किया है, उसका एकमात्र उद्देश्य यही है कि भारत की भिन्न–भिन्न भाषाओं के बोलने वाले पारस्परिक सद्भावना के साथ यहाँ रहें। इसी उद्देश्य से मैंने विदेशियों को भी यहाँ निमन्त्रित किया है। पर मैं तो अब बुढ़ा हो चला और अधिक वर्ष जीवित नहीं रह सकता। स्वभावतः मेरे हृदय में अपनी इस संस्था की चिन्ता है। इसकी आर्थिक जिम्मेदारियां भी सम्भाल नहीं पाता। एक बार मेरी चिन्ता को जानकर पंडित मालवीयजी ने मुझसे पूछा था–कितना पैसा इकट्ठा हो जाने पर आप भारमुक्त हो जायेंगे। मैंने निवेदन किया कि चार–पाँच लाख रुपये पर्याप्त होंगे। पर यह बात जहाँ की तहाँ पड़ी रह गई और पण्डित

मालवीयजी कुछ कर नहीं सके। इस करुणोत्पादक भाषण से प्रभावित होकर सीतारामजी सेकसरिया ने उसी समय गुरुदेव की हिन्दी भवन के लिये पाँच सौ रुपये अर्पित किये। गुरुदेव ने सधन्यवाद उस दान को स्वीकार किया और कहा कि पर्याप्त सहायता मिलने पर हिन्दी भवन की स्थापना अवश्य हो जायेगी।

श्री सेकसरियाजी के उस प्रथम दान से ही हिन्दी भवन की नींव पड़ी, परंतु शांति निकेतन की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण कालान्तर में यह राशि हिन्दी शिक्षक के वेतन पर खर्च कर दी गई। पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी को इस समाचार से हार्दिक खेद हुआ, फिर भी उन्होंने अपना प्रयत्न जारी रखा।

हिन्दी भवन हेतु सहायता प्राप्त करने के लिये चतुर्वेदी जी ने दीनबन्धु एन्ड्रयूज की कलकत्ता यात्रा का कार्यक्रम बनाया। श्री एन्ड्रयूज के ठहरने का प्रबन्ध खेतान बन्धुओं के यहाँ किया गया। सर्वप्रथम पंडित चतुर्वेदी उन्हें श्री भागीरथजी कानोड़िया के पास ले गये। श्री कानोड़िया जी को हिन्दी भवन की योजना के बारे मे बताते हुए चतुर्वेदी जी ने कहा कि—उसमें दो हजार रुपये खर्च होंगे, जिसमें एक हजार आपके जिम्मे रखे गये हैं। कानोड़िया जी ने उसी समय कहा दो हजार में पाँच सौ ही मेरे नाम रखिये। साथ ही आपने कहा शांति निकेतन के हिन्दी भवन के लिये जो मुझसे बन पड़ेगा, करुँगा। श्री चतुर्वेदी दीनबन्धु को लेकर श्री सीताराम सेकसरिया से भी मिले और उन लोगों को पुन दो सौ रुपये की सहायता श्री सेकसरिया जी की ओर से प्राप्त हुई। इसी संदर्भ में चतुर्वेदी जी ने बिड़ला बन्धुओं व रायबहादुर रामदेव चोखानी से भी श्री एण्ड्रयूज की मुलाकात करवायी। दीनबन्धु की इस यात्रा से हिन्दी भवन के लिये क्षेत्र तैयार हुआ यद्यपि उस समय सहायता कुल जमा नौ सौ रुपये की ही मिली थीं।

परन्तु नियति की इच्छा कुछ और ही थी तथा इस बार भी दीनबन्धु द्वारा एकत्र किये गये नौ सौ रुपये हिन्दी शिक्षक के वेतन पर खर्चकर दिये गये। हिन्दी भवन की कल्पना को साकार रुप तभी मिल सका जब श्री भागीरथ कानोड़िया ने अपने प्रयासों से हलवासिया ट्रस्ट से तीस—पैंतीस हजार रुपये दिलवाकर शांति निकेतन में हिन्दी भवन बनवा दिया। श्री चतुर्वेदी जी के अनुसार यदि उस रकम को जोड़ा जाय जो हिन्दी भाषा भाषियों के हिन्दी भवन के लिये शांतिनिकतन को मिली तो वह एक लाख रुपये से कम नहीं होगी।

शांति निकेतन में हिन्दी भवन की स्थापना का इतिहास इस बात का गवाह है कि अगर उस समय भागीरथ जी कानोड़िया तथा अन्य दानवीर मारवाड़ी सज्जनों का सहयोग प्राप्त नही होता तो शायद ही पंडित बनारसीदास चतुर्वेती की यह कल्पना मूर्तिमान हो पाती। परन्तु श्री चतुर्वेदी जी के अनुसार विश्वभारती के वर्तमान संचालकों को हिन्दी भवन की स्थापना के इतिहास का पता भी नहीं। कभी जानने की जरुरत भी उन्होंने नहीं समझी।

इस संदर्भ में पंडित चतुर्वेदी का यह उल्लेख भी विशेष ध्यान देने योग्य है—शांति निकेतन के एक मुख्य अधिकारी ने, जो भारत सरकार में भी कुछ वर्ष रहे थे, एक बार कहा था—हिन्दी भवन मारवाड़ियों ने इसी उद्देश्य से बनाया है कि वे सप्ताह के आखिरी दिन हिन्दी भवन में बिता सकें। जहाँ तक में जानता हूँ कोई भी मारवाड़ी वहाँ इस उद्देश्य से नहीं गया। जब आचार्य क्षितिमोहन सेन ने यह सुना तो उन्होंने स्नेहपूर्वक सिर्फ इतना ही कहा था कि ये निहनन्ति निरर्थक परहितं ते केन जानी महे।◆

श्रद्धांजलि :

रघुनाथ प्रसाद अग्रवाल नहीं रहे

सम्मेलन की तरफ से भावभीनी श्रद्धांजलि

प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी श्री रघुनाथ प्रसाद अग्रवाल का निधन ८ नवम्बर २०१० को हो गया। श्री अग्रवाल दुर्गापुर गोयल गली, बेनाचट्टी के रहने वाले थे। किशोरवय में ही श्री अग्रवाल ने भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया था। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद और बाबू जगजीवन राम के वे निकट सहयोगी थे। १९४७ में उन्होंने बिना दहेज के शादी कर समाज के सामने एक दृष्टांत पेश किया था। जीवन के आरम्भिक दिनों से खादी वस्त्र पहनने वाले श्री अग्रवाल सिद्धान्तवादी और सत्यनिष्ठ थे। विभिन्न संगठनों द्वारा उन्हें पुरस्कृत किया गया था।

True to our values.

True to our people.

True to our projects.

True to our selves.

Tomorrow happens when there is true partnership.

There are companies that only finance instructions. And there are Companies that also finace dreams, aspirations and hopes. SREI, an Indian multinational, belongs to the latter. More than just financial products and services, SREI excels in offering customised, flexible, reliable and cost-effective solution. The focus clearly is on infrastructure equipment, projects and renewable energy resources through innovative financing and "true partnerships".

SREI not only enjoys a leadership position in the market today, but is also recognised as a people-centric company. This investment in human resource development and consistantly acknowledging the blessings of god makes SREI a proud recipient of the Willis Harman Spirit at Work Award.

At SREI, it's the vision of tomorrow that fuels our passion. Propelling us to see tomorrow. Today.

WE MAKE TOMORROW HAPPEN.

SREI
INFRASTRUCTURE FINANCE LIMITED

Visit us at www.srei.com

ASSET FINANCING • INFRASTRUCTURE FINANCING • RENEWABLE ENERGY FINANCE • INVESTMENT BANKING • VENTURE CAPITAL • INSURANCE SERVICES

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2010-2012
Date of Publication - 28, Noverber 2010
RNI Regd. No. 2868/68

S R RUNGTA GROUP

Caring for Land and People...

RUNGTA MINES LIMITED

Mine Owners, Exporters & Sponge Iron Manufacturer

- ***IRON ORE*** *– BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES*
- ***MANGANESE ORE*** *– BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES*
- ***LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE***
- ***SPONGE IRON*** *– LUMPS & FINES*

CORPORATE OFFICE

RUNGTA HOUSE, CHAIBASA – 833 201, JHARKHAND, INDIA
Phone: 06582-256861/256761/256661; Fax: 91- 6582-256442
Email: rungtas@satyam.net.in, Web Site: www.rungtamines.com; GRAM: "RUNGTA"

REGD. OFFICE:

8A, EXPRESS TOWER, 42A, SHAKESPEARE SARANI, KOLKATA – 700 017, INDIA
Phone: 033 - 2281 6580, 22813751; Fax: 91-33- 2281 5380; E-mail: rungta_cal@sify.com

MINES DIVISION:

MAIN ROAD, BARBIL – 758 035, DIST. KEONJHAR, ORISSA, INDIA
Phone : (06767) 275221, Telefax : 91- 6767- 276161

SPONGE IRON DIVISION:

ORISSA
MAIN ROAD, BARBIL – 758 035
DIST. KEONJHAR, ORISSA, INDIA
Phone : (06767) 276891
Telefax : 91- 6767- 276891

JHARKHAND
RUNGTA OFFICE, SADAR BAZAR,
CHAIBASA-833201
DIST. SINGHBHUM(W), JHARKHAND, INDIA
Phone : (06767) 276891/256321 Fax : 91-6582-257521

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319
E-mail : samajvikas@gmail.com

कौस्तुभ जयंती वर्ष

ALL INDIA MARWARI FEDERATION

PLATINUM JUBILEE YEAR

1935-2010

समाज विकास

मूल्य : १० रुपये प्रति, वार्षिक : १०० रुपये

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

▸ नवम्बर २०१० ▸ वर्ष ६० ▸ अंक ११

हरिप्रसाद कानोड़िया सभापति निर्वाचित

- अखिल भारतीय समिति की बैठक 21 नवम्बर 2010 को नागपुर में सम्पन्न

22वां राष्ट्रीय अधिवेशन, बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में जनवरी 2011, पटना में

WONDER GROUP
wonder images
one city. one machine. one colour.
Wonder Images PVT. LTD.
Wonder Images is a ISO 9001 : 2008 certified company with focus on printing for indoor and outdoor advertising across flex, P/E and PVC mediums with printing capacity of 100,000 sq.ft per day.
We have Five state of the art printing machines.(HP UV 2300, HP XLJET 1500, VUTEK 3360, HP LATEX L 65500 & HP Designjet 5500 PS)
Indoor & Outdoor SOLUTIONS
· Front-lit-flex
· Back-lit-flex
· Woven P/E
· Self Adhesive vinyl
· Building wrap
· One way vision
· Vehicle / fleet graphics
· Floor and wall graphics
· Reflective Signage
· Frosted vinyl
· Canvas
· Translite
· Photo realistic poster paper
· Mesh, Tyek, Yupo
only 1 in eastern India to expertise in printing on woven P/E
Hundreds of colours & media for Indoors
5 State-of -the-art printing machine
Eastern India's Largest Outdoor Printers.
Contact Us:
Amit: 09830425990
Email: amit@wondergroup.in
Works:
Tangra Industrial Estate- II
(Bengal Pottery Compound)
45, Radhanath Chowdhury Road. Kolkata – 700 015
Tel: 033 2329 8891-92

समाज विकास

✦नवम्बर २०१० ✦वर्ष ६० ✦अंक ११ ✦एक प्रति–१० रु. ✦वार्षिक–१०० रु.

अनुक्रमणिका

क्रमांक	पृष्ठ संख्या
अपनी बात – शम्भु चौधरी	५
अध्यक्षीय – नन्दलाल रुँगटा	६
जीवन परिचय : हरिप्रसाद कानोड़िया	७
अखिल भारतीय समिति की बैठक नागपुर में पेश	
राष्ट्रीय महामंत्री की रिपोर्ट	८
अखिल भारतीय समिति की बैठक	
समाज के सामने आ रही है नई–नई चुनौतियां – नन्दलाल रुँगटा	१०
युवाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत ८५ वर्षीय बाबा	१३
प्रांत मजबूत होंगे तो केन्द्रीय सम्मेलन मजबूत होगा–सीताराम शर्मा	१६
दोहे – नरेन्द्र गोयल	१७
राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक का संक्षिप्त ब्यौरा	१८
स्थायी समिति बैठक की संक्षिप्त रिपोर्ट	१९
पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन	
दीपावली प्रीति सम्मेलन	१९
राजस्थान का अग्नि–नृत्य – सूर्यशंकर पारीक	२०
कविता : आनन्दित है पल–पल जीवन का – संदीप जैन	२१
चिट्ठी आई है :	२१
जब राजेन्द्र बाबू ने राजस्थानी लोक–गीत सुने! – अक्षयचन्द्र शर्मा	२२
जी, मैं मारवाड़ी हूँ – स्व. रामेश्वर टाँटिया	२५
'गंगा' को संगीतमय श्रद्धा निवेदित	२७
महादानव भ्रष्टाचार – ओम लडिया	२८
कैरियर श्रेष्ठ या मातृत्व का उत्तरदायित्व – भँवरलाल गट्टानी	२९
"ओसामा को ना ढूंढ सका, फिर तू काहे का दादा है"	३०
सम्मेलन के नये आजीवन सदस्यों की सूची	३१
मारवाड़ी समाज गरीबों की मदद करने के लिए हमेशा आगे–गोपीनाथ मुंडे	३२
शांति निकेतन में हिन्दी भवन की स्थापना में मारवाड़ियों का योगदान – रमेश पसारी	३३
श्रद्धांजलि : रघुनाथ प्रसाद अग्रवाल नहीं रहे	३४

स्वत्वाधिकारी :

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ✦ १५२बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता–७००००७

फोन : ०३३–२२६८ ०३१९ ✦ E-mail: samajvikas@gmail.com

के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा

ऐथल प्रिंटर्स प्रा.लि., ४५बी, राजाराम मोहन राय सरणी, कोलकाता–७००००९ में मुद्रित

✦संपादक : नंदकिशोर जालान ✦ कार्यकारी संपादक : शंभु चौधरी

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

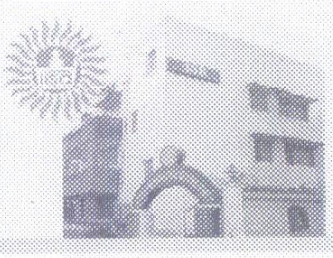

IISD

A Gateway to Careers

SREI Foundation

"Educate Morally & Technically"
— Swami Vivekanand

Upto 100% Scholarship to economically challenged students

3 Yrs. BBA Rs. 75,000

3 Yrs. BCA Rs. 75,000

2 Yrs. MBA Rs. 85,000

Affordable fees

Convenient Weekend Classes
A.C Classrooms

Courses Offered

- MBA, BBA and BCA
- Language Courses: Functional English, Spoken English, Spanish, Italian, French, Russian, German, Chinese, Japanese, Arabic, Burmese, Persian, Korean, Sanskrit and Hindi
- Certificate Course in Computer Applications
- Advanced Diploma in Financial Management
- Entrepreneurship Development
- Vocational & Technical Training

Preparatory Courses

- MD, MS, MRCP (Medicine) Part I and DNB Part I
- Indian Administrative Service (IAS) and Allied Services Examinations (Prelim and Main)
- WBCS-Executive and Judicial Services Examinations (Prelim and Main)
- Chartered Accountancy (PE-I, PE-II and Final)
- NDA/CDS-UPSC Examinations and SSB Interview
- Diploma in Banking and Finance
- CS (Company Secretary) Courses (Foundation, Intermediate and Final)
- Advocateship

Assistance for Admission to Grodno State Medical University, Belarus

Complimentary ERP Training and Business English certificate from British Council

Degree conferred by Punjab Technical University approved by UGC, Ministry of HRD, GoI, and DEC

INSTITUTE FOR INSPIRATION & SELF DEVELOPMENT

IB-200/1, Sector-III, Salt Lake, Kolkata - 700 106
Ph : 2335 2378/2861, Fax : 2335 2379
E-Mail : info@iisdedu.in • Website : www.iisdedu.in

अपनी बात :

गठबन्धन की सरकार

"अली बाबा-चालीस चोर"

- शम्भु चौधरी

"**अली बाबा चालीस चोर**" की कहानी आप सभी ने पढ़ी ही होगी। "**खुलजा सिम-सिम**" खजाने का दरवाजा खोलकर चोरी करने का मूल मंत्र था इस कहानी का। आज देश में भी यही चोर दरवाजा चन्द राजनैतिक नेताओं का बन गया है। कॉमनवेल्थ घोटाला, आई.पी.एल. घोटाला, आदर्श सोसाइटी, २जी स्पेक्ट्रम घोटाला। न जाने कितने घोटाले और इन घोटालों के गर्भ में कितने घोटाले होंगे। मंत्रियों को हटाने के लिए मनमोहन-सोनिया जी की सरकार गठबंधन धर्म के कारण धर्मसंकट में पड़ रही है। एक चोर दूसरे चोर को बचाने या पकड़ाने में लगा है। छोटा चोर पकड़ा गया तो कहीं उसकी भी पोल न खुल जाए।

दूसरी तरफ "**भारत स्वाभिमान यात्रा**" के नाम से बाबा रामदेव जी ने एक राष्ट्रव्यापी अभियान छेड़ दिया जिसमें श्री अन्ना हजारे, श्रीमती किरण बेदी, श्री अरविन्द केजड़ीवाल बाबा रामदेव जी के इस अभियान की नई कड़ी के रुप में उभरकर सामने आये हैं। यदि यह कारवां सारे भारतवर्ष को अपनी यात्रा '**जनयुद्ध**' से जोड़ कर राष्ट्र को भ्रष्ट मुक्त प्रशासन देने में सफल होते हैं तो यह भारत के लिए सर्वाधिक गौरव की बात होगी। परंतु जिस देश में वोट धर्म-जाति के आधार पर, अगड़ी-पिछड़ी के नाम पर, गुण्डे-डण्डे के बल पर चुनाव लड़ा जाता है उस देश में भ्रष्ट नेताओं के इस टीढ़ी दल को सिर्फ मच्छर मारने की दवा फेंकने से समाप्त नहीं किया जा सकता।

मेरी एक कविता का उल्लेख यहाँ करना चाहूँगा :

जल जाएगी धरती जब सत्ता के गलियारे में,
भड़क उठेगी ज्वाला तब नन्हों से पहरेदारों में।

दूसरी तरफ "**भारत स्वाभिमान यात्रा**" के नाम से बाबा रामदेव जी ने एक राष्ट्रव्यापी अभियान छेड़ दिया जिसमें श्री अन्ना हजारे, श्रीमती किरण बेदी, श्री अरविन्द केजड़ीवाल बाबा रामदेव जी इस अभियान की नई कड़ी के रुप में उभरकर सामने आये हैं। यदि यह कारवां सारे भारतवर्ष को अपनी यात्रा '**जनयुद्ध**' से जोड़ कर राष्ट्र को भ्रष्ट मुक्त प्रशासन देने में सफल होते हैं तो यह भारत के लिए सर्वाधिक गौरव की बात होगी। परंतु जिस देश में वोट धर्म-जाति के आधार पर, अगड़ी-पिछड़ी के नाम पर, गुण्डे-डण्डे के बल पर चुनाव लड़ा जाता है उस देश में भ्रष्ट नेताओं के इस टीढ़ी दल को सिर्फ मच्छर मारने की दवा फेंकने से समाप्त नहीं किया जा सकता। गठबन्धन की सरकार धीरे-धीरे भारत में कैन्सर का रुप लेता जा रहा है जिसमें भारत की अर्थव्यवस्था को लुटने के लिए व्यापारी, मंत्री, संत्री सभी एक कतार में खड़े हो गए हैं। केन्द्र सरकार हो या राज्य सरकार सभी एक ही धर्म-युद्ध करने में लगे हैं वह युद्ध है गठबंधन धर्म। इस धर्म ने देश को निलामी पर चढ़ा दिया है। कौन कितना लूट सकता है देश को इसकी बोली संसद-विधानसभाओं में लगायी जाती है। जो इस बोली में सफल होता है उसे अलीबाबा का वह मूलमंत्र "**खुल जा सिम-सिम**" दे दिया जाता है अर्थात् मंत्री बना कर देश लूटने का अधिकार उसे सौंप दिया जाता है।

जबकि सांसदों को मुँह बन्द रखने के लिए सरकार प्रतिवर्ष २ करोड़ रुपये विकास के नाम देती है जिसे अधिकतर सांसद फर्जी संस्थाओं के नाम से भुना कर इस रकम को हजम कर जाते हैं। विकास कितना होता है यह तो आप सभी को मालूम ही होगा।

अन्त में पुनः धन्यवाद के साथ :

न्यायपालिका जब यहाँ पर सत्ता की गुलाम बनी,
जंजीरों को तोड़ यहाँ लुटेरों की सरकार बनी।
विधानसभा जेलों में होगी संसद तब तिहाड़ बने,
थाने-थाने में गुण्डे होंगे, देश के पहरेदार बने।
जल जाएगी धरती.....

◆◆◆